



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 15] नई दिल्ली, शनिवार, अप्रैल 9, 1994 (चैत्र 19, 1916)  
No. 15] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 9, 1994 (CHAITRA 19, 1916)

इस भाग में निम्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

## विषय-सूची

भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधिवत नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	पृष्ठ 323	भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय को शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासकों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों जिनमें (सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी अधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	पृष्ठ —
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	325	भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	—
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के संबंध में अधिसूचनाएं	—	भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, निर्यात और गृह विभाग, परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	349
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के संबंध में अधिसूचनाएं	615	भाग III—खण्ड 2—वेस्ट कार्यालय द्वारा जारी की गई वेस्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	329
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*	भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	—
भाग II—खण्ड 1—क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*	भाग III—खण्ड 4—विभिन्न अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	2281
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*	भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	55
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासकों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिसमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*	भाग V—घरेली और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को बताने वाला अनुपूरक	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासकों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*		

## CONTENTS

	PAGE		PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court. . . . .	123	PART II —SECTION 3—SUB-SEC. (iii) Authoritative texts in Hindi (other than such texts, Published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court. . . . .	325	PART II —SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence . . . . .	*
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence . . . . .	—	PART III —SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India . . . . .	349
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence . . . . .	615	PART III —SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs . . . . .	329
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations . . . . .	*	PART III —SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners . . . . .	—
PART II—SECTION 1-A—Authoritative texts in Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations . . . . .	*	PART III —SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies . . . . .	2281
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills . . . . .	*	PART IV —Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies . . . . .	55
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) . . . . .	*	PART V —Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi . . . . .	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) . . . . .	*		

## भाग I—खण्ड 1

## [PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी 1994

सं० 24-प्रेज/94—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके विशिष्ट वीरतापूर्ण कार्यों के लिए “कीर्ति चक्र” प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री उग्रसेन साहू, धनकनाल, उड़ीसा (मरणोपरान्त)  
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 जुलाई, 1991)

31 जुलाई, 1991 की रात भुजाली और चाकू से लैस दो अपराधी ग्राम गंजोडी, जिला धनकनाल में श्री बिनोद कुमार साहू के घर में घुस गए और स्वर्ण आभूषण, रेडियो तथा पन्द्रह हजार रुपये की नकद राशि लूट रहे थे कि घरवालों ने शोर मचाया। इस शोर और गुहार को सुनकर पाम पड़ोस के लगभग डेढ़ सौ लोग श्री साहू के घर के चारों ओर इकट्ठा हो गए, किंतु अपराधियों द्वारा बम फेंके जाने की धमकी से डरकर भीड़ का कोई भी आदमी घर के अन्दर सहायता के लिए घुसने का साहस न कर सका।

लूट का माल लेकर भागते समय अपराधियों ने कई गांव वालों पर प्रहार किया। उसी गांव के वासी और सहायक अध्यापक श्री उग्रसेन साहू ने अत्यन्त तत्परता और अनुकरणीय वीरता का परिचय देते हुए सशस्त्र अपराधियों को पकड़ने का साहसिक प्रयास किया, ताकि गांव वालों की रक्षा हो सके। दुर्भाग्यवश उनके पेट और पीठ में एक अपराधी ने गहराई तक चाकू धोप दिया। कामाख्या नगर अस्पताल ले जाते समय उनका प्राणान्त हो गया।

श्री उग्रसेन साहू के इस साहसिक प्रयास से अपराधियों को पहचानने और उनकी धर-पकड़ में सहायता मिली। इस प्रकार साथी ग्रामवासियों की रक्षा में श्री उग्रसेन साहू ने अपने जीवन का बलिदान किया।

2 4456979 सिपाही सतनाम सिंह, 7 सिख साईट इन्फैंट्री (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 13 मार्च 1992)

13 मार्च, 1992 को पंजाब के ककराली क्षेत्र में घेराबंदी और तलाशी अभियान के दौरान, सुबह 6 बजकर 50 मिनट पर एक ट्यूबवेल के पास ए० के० 47 राइफलों से लैस 6

आतंकवादियों ने सिपाही सतनाम सिंह और साथी सैनिकों पर गोलीबारी शुरू की। सैनिकों द्वारा भीषण जवाबी गोलीबारी में वस्तु होकर आतंकवादी निकट के गन्ने के खेत की ओर भागने लगे। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की अनदेखी करते हुए सिपाही सतनाम सिंह ने उनका पीछा किया और उनमें से एक को अपने अचूक निशाने से मार गिराया। किंतु अन्य आतंकवादियों द्वारा की गई गोलियों की बौछार से स्वयं घायल हो गए। अपने घावों से बहते हुए खून की चिन्तान करते हुए वे लड़ते रहे और एक अत्यन्त दुर्दान्त आतंकवादी को, जो तथाकथित खालिस्तान लिबरेशन फोर्स का स्वयंभू लेफ्टिनेंट जनरल था, आमने-सामने की लड़ाई में मौत के घाट उतार दिया। अन्य भागते हुए आतंकवादियों पर हथगोला फेंक कर बायल कर दिया, किंतु उनकी ओर से चल रही गोलियों की बौछार इस वीर सिपाही के माथे पर आ लगी और वे वीरगति को प्राप्त हुए। उन्होंने और साथी सैनिकों ने इस सैनिक कार्यवाही में पांच आतंकवादियों का मकाया किया।

इस प्रकार सिपाही सतनाम सिंह ने अभूतपूर्व शौर्य, साहस और निष्ठा से कर्तव्य पालन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

3. 2988308 सिपाही रामस्वरूप गुजर, 27 राजपूत रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 सितम्बर 1992)

23 सितम्बर, 1992 को जम्मू और कश्मीर के बारामुला जिले के एक गांव में घेराबंदी और तलाशी अभियान के दौरान लगभग डेढ़ बजे दिन में सिपाही रामस्वरूप गुजर ने, अपने सैनिक साथियों के साथ मिलकर घेराबंदी तोड़कर भागने वाले आतंकवादी का पीछा किया और उसे धान के खेत में घेर लिया। आतंकवादी ने सैनिकों पर फेंकने के लिए एक हथगोला निकाला तो उस वीर सैनिक ने बड़ी तत्परता और सूझबूझ से आतंकवादी को धर दबोचा ताकि वह सैनिकों पर हथगोला न फेंक सके। दुर्भाग्यवश हथगोले के विस्फोट की चपेट में सिपाही राम स्वरूप गुजर आ गए।

उन्होंने अदम्य साहस, वीरता और निष्ठा से अपने साथी सैनिकों की जीवन रक्षा में अपना जीवन निछावर कर दिया।

इस प्रकार सिपाही राम स्वरूप गुजर ने अपनी जान की बाजी लगाकर अपने साथियों की जान बचाने में असाधारण वीरता, साहस और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

4. 3383731 लांस नायक जगजीत सिंह, 2 सिख रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 03 अक्टूबर, 1992)

जम्मू और कश्मीर के बड़गंम क्षेत्र में एक गांव के आसपास, आतंकवादियों को हलाक करने और पकड़ने की कार्यवाही में तीन अक्टूबर, 1992 को दोपहर बाद लगभग 3 बजे लांसनायक जगजीत सिंह ने तीन राष्ट्र-विरोधी तत्वों को धान के खेत में भागते देखा। अपनी सुरक्षा की चिंता न करते हुए वे चलते हुए ट्रक से कूद पड़े और उनका पीछा करने लगे। एक पाकिस्तान प्रशिक्षित कट्टर आतंकवादी को उन्होंने धर दबोचा। बाद में शिनाख्त करने पर यह आतंकवादी गुलजार अहमद मलिक उर्फ गुल पहलवान पाया गया जो कि अल मुजाहिदीन गुट का सरगना था।

उसी शाम साढ़े पांच बजे सुबह गिरफ्तार किए गए आतंकवादी की सूचना पर और उसके द्वारा इंगित किये जाने पर लांस नायक जगजीत सिंह ने एक अन्य कट्टर आतंकवादी का पीछा किया। किन्तु वह गोलियां चलाता हुआ मक्की के खेत में छिप गया। दोनों के बीच हुई गोलीबारी में दोनों ही घायल हुए। अत्यन्त गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद लांस नायक जगजीत सिंह आतंकवादी पर गोलीबारी करते रहे। इस बीच उन के अन्य साथी सैनिकों ने उस आतंकवादी को मौत के घाट उतार दिया तथा उसकी ए० के० 56 रायफल, हथगोला और गोलियां आदि बरामद किए।

इस प्रकार लांस नायक जगजीत सिंह ने अदम्य साहस के साथ अपने कर्तव्य का पालन करते हुए वीरगति पाई।

5. जेसी-एन वाई ए-13734792 नायब सूबेदार बलदेव राज, 17 जम्मू और कश्मीर राइफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 03 नवम्बर, 1992)

03 नवम्बर, 1992 के दिन सुबह लगभग 7 बजे आतंकवादियों के साथ मुठभेड़ होने की सूचना मिलने पर, नौगंम क्षेत्र में तैनात जम्मू और कश्मीर राइफल्स की 17वीं बटालियन के नायब सूबेदार बलदेव राज को घटनास्थल पर कुमक के साथ पहुंचने का आदेश हुआ। घटनास्थल पर पहुंचने का केवल एक ही मार्ग था और उस मार्ग पर पहले भी एक जूनियर कमीशंड आफिसर ने वीरगति पायी थी और एक नॉन कमीशंड आफिसर बुरी तरह घायल हुआ था। इस विषम परिस्थिति के बावजूद नायब सूबेदार बलदेव राज ने उसी जोखिम भरे मार्ग पर अपनी सुरक्षा की चिंता न करते हुए, अपने दो जवानों के साथ जाने का निर्णय लिया, और शीघ्र आतंकवादियों से जुझने लगे। एक आतंकवादी ने निकट से उनको गोली मारी किन्तु धराशायी होने से पूर्व वीर बलदेव राज ने आतंकवादी को अपने अचूक निशाने से मौत के घाट उतार दिया। अपनी अंतिम सांस रहने तक वे आतंकवादियों पर गोली चलाते रहे और एक अन्य आतंकवादी को बुरी तरह घायल किया।

इस प्रकार नायब सूबेदार बलदेव राज अदम्य साहस और वीरता से लड़ते हुए, वीरगति को प्राप्त हुए।

6. 2481169 सिपाही गुरतेज सिंह गिल, 15 पंजाब रेजिमेण्ट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 जनवरी, 1993)

31 जनवरी, 1993 को जम्मू और कश्मीर के वुलीगुण्ड गांव में घेराबंदी और तलाशी के दौरान सिपाही गुरतेज सिंह गिल और उनके साथी गांव में छिपे आतंकवादियों की गोलीबारी तले आ गए। उस नौजवान सिपाही ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए गांव में घुस कर एक आतंकवादी को हाथापाई के बाव पकड़ लिया।

पकड़े गए आतंकवादी द्वारा दी गई सूचना के आधार पर उसी गांव में आतंकवादियों के अड्डे की ओर बढ़ते हुए जब उनके साथी सैनिक धुआधार गोली बारी तले आए तो सिपाही गुरतेज सिंह अनुकरणीय वीरता का परिचय देते हुए, उस अड्डे में हथगोला फेंकते हुए घुस गए और आतंकवादियों को गोलीबारी को निष्क्रिय कर दिया।

थोड़ी देर बाद इसी सैन्य कार्यवाही के दौरान एक और दुर्घन्त आतंकवादी को पकड़ने के लिए वे निडर होकर आगे आए और उसके छिपने के स्थान की तरफ रेंगकर आगे बढ़ने लगे। अपने भागने के मार्ग को बंद होता देख उस आतंकवादी ने नौजवान सिपाही पर गोलियां चलाई और फिर भागने लगा। सिपाही गुरतेज सिंह गिल, अपने पैर में गोली लगने के बावजूद उसका पीछा करने लगे और अन्ततः उसे मार गिराया। इस कार्यवाही के दौरान वे अन्य आतंकवादियों की गोलियों की चपेट में आ गए और वीरगति को प्राप्त हुए।

इस प्रकार सिपाही गुरतेज सिंह गिल ने अदम्य साहस, वीरता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान दिया।

7. 2874977 नायक नवाब सिंह तोमर, 11 राजपूताना राइफल्स (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 09 अप्रैल, 1993)

09 अप्रैल, 1993 को जम्मू और कश्मीर के बड़गंम क्षेत्र में यह निश्चित सूचना मिलने पर कि पोहार गांव में आतंकवादी छिपे हुए हैं, 11 वीं बटालियन, राजपूताना राइफल्स ने, चारों दिशाओं से, राइफल्स कंपनियों और कमांडो प्लाटून द्वारा गांव को घेर लिया। दोपहर लगभग दो बजे आतंकवादियों द्वारा कमांडो प्लाटून पर भयंकर गोलीबारी के जवाब में टीम लीडर नायक नवाब सिंह तोमर ने तत्काल कार्यवाही की। यह देख कर कि आतंकवादियों का एक दल घेरा तोड़कर भागने का प्रयास कर रहा है, उसे रोकने के लिए उन्होंने अपने दल को पुनः तनात किया। इस कार्यवाही में, अपनी सुरक्षा की तनिक भी चिन्ता न करते हुए, भयंकर गोलीबारी के मध्य उन्होंने एक आतंक-

वादी को मार गिराया, हालांकि इस दौरान एक गोली उनके दाहिने हाथ में आ लगी थी। घेरा तोड़कर निकल भागने के भीषण प्रयास में आतंकवादी अंधाधुंध गोलियां चलाने लगे। उनका पीछा कर रहे बहादुर नायक नवाब सिंह तोंमर ने, अपने पेट में पुनः कई गोलियां लगने के बावजूद आतंकवादियों पर अचूक और श्रद्धा प्रहार किया, तथा उनमें से दो का काम तमाम कर दिया।

इस प्रकार नायक नवाब सिंह तोंमर अदम्य साहस और शौर्य से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

8. 2589308 नायक बी० कन्नालन केनाडी, 25 मद्रास रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 अप्रैल, 1993)

जम्मू और कश्मीर में ऊंचाई वाले क्षेत्र में, नियंत्रण रेखा के पास सैनानी के समय 10 अप्रैल, 1993 को प्रातः 6 बजे, 25वीं बटालियन, मद्रास रेजिमेंट के कुछ सैनिकों ने देखा कि राष्ट्रविरोधी तत्व सीमा पार से घुसपैठ कर रहे हैं। उन्हें रोकने के उद्देश्य से, नायक कन्नालन केनाडी बी, दो जवानों के साथ अपनी लाइट मशीनगन लेकर शम्शवाड़ी पर्वत श्रृंखला के शिखर पर पहुँचे। अपनी ओर आक्रामक रुख से बौड़कर आते हुए दो राष्ट्र विरोधी तत्वों में से एक को उन्होंने वहीं मार गिराया। इस पर दूसरा आदमी भागने लगा तो उन्होंने उसका पीछा किया। इस दौरान पर्वत श्रृंखला पर छिपे हुए अन्य राष्ट्र विरोधी तत्वों ने गोलियां चलाई और पैर में गोली लगने के कारण नायक केनाडी गिर पड़े। घायल होने के बावजूद वे अपनी एल० एम० जी० से गोलियां चलाने रहे। अपनी गोलियां समाप्त होने पर, राष्ट्र विरोधी तत्व की ए० के० 56 राइफल लेकर तब तक गोलीबारी जारी रखी जब तक कि उसके साथी सैनिकों ने आतंकवादियों को घेर नहीं लिया। इसके पश्चात दोनों ओर से हुई भयंकर गोलीबारी में सात राष्ट्रविरोधी तत्व और मारे गए और भारी मात्रा में उनका अस्त्र-शस्त्र छीन लिया गया। इस दौरान, अदम्य साहस और धैर्य से लड़ते हुए नायक बी० कन्नालन केनाडी पुनः घायल हुए और अंततः वीरगति को प्राप्त हुए।

9. जे० सी०-169280 सूबेदार रेवेल सिंह, 4 जम्मू और कश्मीर राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 03 मई, 1993)

कम्बोडिया में संयुक्त राष्ट्र अंतरिम प्राधिकरण के अंतर्गत 3 मई, 1993 को त्रावन्कास-स्तुंग त्रांग मार्ग पर मोटर गाड़ियों में गश्त लगते समय सुबह लगभग 9 बजे सबसे आगे चल रही आपकी गाड़ी स्वचालित हथियारों द्वारा की गई भारी गोलीबारी की चपेट में आ गई। जनतांत्रिक-कंप्यूचिया राष्ट्रीय सेना द्वारा चलाए गए राकेट से गाड़ी की ईंधन टंकी में विस्फोट हो गया। दोनों हाथों में गोलियां लगने से आप गंभीर रूप से घायल हो गए। उसी गोलीबारी में, आहत होने पर बाहन चालक स्टीयरिंग-व्हील पर लुढ़क गया।

स्वयं गंभीर रूप से घायल होने पर भी आपने अपनी चिता न करते हुए, अपने सैनिकों को जवाबी गोलीबारी का आदेश दिया और फिर अदम्य साहस का परिचय देते हुए, गोलियों की बौछार और धूँ-धूँ कर ऊपर उठती हुई लपटों के बीच से घायल बाहन चालक को गाड़ी से खींचकर बाहर निकाला। राकेट से ध्वस्त जलती हुई गाड़ी से उतर कर, भारतीय सैनिकों द्वारा स्वचालित शस्त्रों से अपने ऊपर आ रही गोलीबारी का जवाब तत्काल और अत्यंत भयंकर गोलीबारी से दिए जाने पर जनतांत्रिक कंप्यूचिया राष्ट्रीय सेना के छापामार सैनिक अचंभे में पड़कर स्तब्ध रह गए। इस बीच भारतीय सैन्य गश्ती दल के बाकी सैनिकों ने अपनी एल० एम० जी० और दो ईंधन मार्टर से गोलीबारी शुरू की। जनतांत्रिक कंप्यूचिया राष्ट्रीय सेना के दो सैनिक घायल हुए और शेष तत्काल हुए जवाबी हमले से घबराकर मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए।

एक वर्ष के कार्यकाल में यह पहला अवसर था कि संयुक्त राष्ट्र सैन्य दल ने छापामार सैनिकों के हमले को विफल कर दिया। इसका श्रेय सूबेदार रेवेल सिंह को जाता है जिन्होंने अभूतपूर्व शौर्य, अनुपम साहस एवं उत्कृष्ट नेतृत्व का परिचय दिया।

ह०

गिरीश प्रधान  
निदेशक

नई दिल्ली, दिनांक 26 जनवरी, 1994

सं० 25-प्रेज/94—राष्ट्रपति, निम्नलिखित व्यक्तियों को उनके वीरतत्पूर्ण कार्यों के लिए “शौर्य चक्र” प्रदान किए जान का अनुमोदन करते हैं :—

1. विंग कमांडर राजेन्द्र कृष्ण खन्ना (सेवानिवृत्त) जयपुर राजस्थान

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 जनवरी, 1988)

19 जनवरी, 1988 को जब आप प्रशिक्षक के रूप में जयपुर के हवाई अड्डे से एक प्रशिक्षार्थी के साथ छोटे विमान “सेसना” में उड़े तो लगभग 800 फुट की ऊंचाई पर उड़ रहे विमान से टक्कर बचाने के लिए आप विमान का नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया। आप विमान नीचे लाए और फिर ऊपर ले गये। इस तरह टक्कर तो बचा ली किंतु विमान में लगी बारह किलोग्राम की बैटरी के अपने स्थान से हटकर ऐलिवेटर और ट्रिगर तारों पर गिर जाने से शाट सर्किट हो गया, जिससे विमान नियंत्रण प्रणाली अवरुद्ध हो गई। विमान में तारों के जलने का धुआं और बदबू फैली, किन्तु फिर भी, आपने विमान को अपनी सूझ-बूझ और अन्य पुर्जों की जानकारी के आधार पर नियंत्रण में रखा और धरती पर उतारने में सफल हुए।

इस प्रकार विंग कमांडर राजेन्द्र कृष्ण खन्ना (सेवानिवृत्त) ने न केवल अपने जीवन की अपितु प्रशिक्षार्थी के जीवन की और उस विमान की भी रक्षा की।

2. डा० राजेन्द्र प्रसाद मोहंती, भुवनेश्वर, उड़ीसा (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 1 अगस्त, 1989)

1 अगस्त, 1989 की सायंकाल 8.30 बजे के लगभग डा० राजेन्द्र प्रसाद मोहंती अपने घर के पास एक महिला की दर्द भरी चीत्कार सुनते ही, बाहर आए और देखा कि श्री एम० एम० रथ और उनकी पत्नी श्रीमती रश्मि रानी रथ को अपराधी तत्व घेर कर, उन पर चार कर रहे थे। एक बदमाश श्रीमती रथ से छेड़ छड़ कर रहा था और उनका स्वर्णहार छीन रहा था जबकि एक दूसरा बदमाश श्री रथ पर चाकू से चार कर रहा था। डा० राजेन्द्र प्रसाद मोहंती ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए बदमाशों को पकड़ने का प्रयास किया। किंतु, एक अन्य बदमाश ने उनके पेट में लम्बा छुरा भोंक दिया जिस से उनका निधन हो गया।

इस प्रकार डा० राजेन्द्र प्रसाद मोहंती ने दो अन्य व्यक्तियों के जीवन की रक्षा करते हुए, अपने जीवन को बलिदान कर दिया।

3. श्री मोहन सिंह, गुरदासपुर, पंजाब

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 जनवरी, 1990)

23 जनवरी, 1990 को सायंकाल 7 बजे ग्राम बड़ई जिला गुरदासपुर स्थित आपके घर में श्री गुरुग्रंथ मन्दिर का पाठ हो रहा था तो, एके 47 राइफलों से लैस 4 आतंकवादी घुस आए और आपसे आपकी लाइसेंस बन्दूक की जबरन मांग की। बन्दूक न देने पर, आतंकवादियों ने सभी घरवालों को जान से मार डालने की धमकी दी। किंतु आपने बड़े धीरज और साहस से न केवल बन्दूक देना अस्वीकार कर दिया बल्कि उन्हें ललकारा भी। इस पर आपके और आतंकवादियों के बीच 15 मिनट तक गोली चली। आपकी दोनली बन्दूक की एक नली आतंकवादियों की गोली से ध्वस्त होने के बावजूद दूसरी नली से गोली चलाते रहे और एक आतंकवादी को घायल भी किया। दुर्भाग्यवश आपका एक जवान बेटा हरदीप सिंह इस गोलीबारी में गंभीर हुआ। फिर भी, आपने हिम्मत न हारी और आतंकवादियों से तब तक वीरतापूर्वक लोहा सेते रहे जब तक कि आतंकवादियों ने पीठ नहीं दिखा दी।

इस प्रकार श्री मोहन सिंह ने असाधारण साहस, धैर्य और सूक्ष्म का परिचय देते हुए, आतंकवादियों से टक्कर लेकर न केवल अपने परिवार की, बल्कि वहां एकत्रित अन्य अतिथियों के जीवन की भी रक्षा की।

4. श्री काशी नाथ महापात्रा, कटक, उड़ीसा (मरणोपरांत)  
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 जनवरी, 1991)

18/19 जनवरी, 1991 की रात लगभग एक बजे ग्राम गुंडीलो, जिला कटक के एक घर में 8-10 डाकुओं ने डाका डाला और बमों का विस्फोट किया। अन्य ग्रामवासियों के साथ 38 वर्षीय श्री काशी नाथ महापात्रा घटना स्थल पर पहुंचे और डाकुओं को ललकारते हुए उनमें जूझने लगे।

श्री महापात्रा ने असाधारण साहस और वीरता से अपनी जान जोखिम में डालते हुए डाकुओं से लोहा लिया। दुर्भाग्यवश एक डाकू के भयंकर प्रहार से उनके सर में गहरी चोट आई और बाद में कटक के अस्पताल में उनका निधन हो गया।

इस प्रकार श्री काशी नाथ महापात्रा ने डकैतों को ललकारने में अनुकरणीय पराक्रम और साहस का परिचय दिया।

5. लेफ्टिनेंट कमांडर सत्येन्द्र शर्मा, नौसेना मेडल, 01664-एफ

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 नवम्बर 1991)

14 नवम्बर 1991 को जब एम० बी० जाकिर हुसैन नामक जहाज के पिछले ऊपरी ढाँचे में आग लग गई और निकट की बड़ी बो नौकाओं द्वारा बड़ी मात्रा में पानी डालने पर भी आग नियंत्रण में नहीं हुई तो आप अपने दल के साथ आपरेशन मदद के तहत जहाज पर गए। आपने मूल्यंकम किया कि समुद्र तल पर बिछी गैस पाईप लाईन को इस जहाज से खतरा है और जलते जहाज को वहां से हटाया जाना चाहिए किंतु बिजली की रोशनी के अभाव में अंधेरा होने के कारण कुछ न किया जा सका। अगले दिन प्रातः काल नौसेना की टोली के साथ आप फिर जलते हुए जहाज पर गए और उसे समुद्र तल की गैस पाईप लाईन से दूर ले जाकर लंगर डाला। आपने व आपके नेतृत्व में नौसैनिक दल ने सूक्ष्म और सहनशीलता से भयंकर आग पर काबू पाया। अपनी सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए आप उस जहाज के विभिन्न भागों में जाकर चालक दल के सदस्यों को ढूँढते रहे और कुछ शव भी बाहर लाए।

इस प्रकार ले० कमांडर सत्येन्द्र शर्मा, नौसेना मेडल ने घुएं और विपैली गैसों से भरे जहाज पर सुरक्षा और बचाव कार्य करने में अदभुत साहस, दृढ़ निश्चय और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

6. 6371911 लांस नायक बदरी लाल, सेना सेवा कोर

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 जून, 1992)

15 जून 1992 को छुट्टी से लौटते समय रात में लगभग पीने एक बजे जब आप दादर-गुवाहटी एक्सप्रेस के एक

डिब्बे के दरवाजे के पास बैठे थे तो गाड़ी के अचानक रुकने पर, डाकूओं के एक गिरोह ने पिस्तौल, तलवार और खूबरी से आप को धमकाते हुए डिब्बे का दरवाजा खोलने को कहा उस डिब्बे में 100 से अधिक अमेरिकन रेलगाड़ियों की जान और माल का भयंकर खतरा देखते हुए, आपने जोर से आवाज लगाकर उन्हें सचेत किया। धमकाने वाले डाकूओं में से एक की पिस्तौल पकड़ कर आप छीनने की कोशिश कर रहे थे कि इस खींचातानी में एक अन्य डाकू ने अत्यंत निकट से आपके पेट में गोला मार दी। विचलित न होते हुए आप वहीं जमे रहे और जब डाकू वहां से निराश होकर अन्य डिब्बे लूटने गए तो आपने साहस के साथ खिड़कियां बंद की। अधिक खून बह जाने से मूर्छित होकर गिर पड़े और बाद में आपको उपचार के लिए कलकत्ता ले जाया गया।

इस प्रकार लांस नायक बदरी लाल ने अपने साथी यात्रियों की जान और माल की रक्षा में उत्कृष्ट बीरता, सूझबूझ और साहस का परिचय दिया।

7. श्री मोहम्मद सत्तार सोढ़ा, सीमेंट, सीमा शुल्क प्रभाग जामनगर, गुजरात  
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 जून, 1992)

21 जून, 1992 को समुद्री गश्त लगाती हुई सीमा शुल्क विभाग की नौका ने एक निषिद्ध माल ले जा रही नौका को पकड़ा और उस पर सीमाशुल्क रक्षक तैनात किए। 22 जून 1992 को लगभग अर्धरात्रि में पकड़ी गई नौका के तस्कर ने जो बोरी छिपे चांदी ले जा रहा था माल वाहक नौका में आग लगा दी। धू-धू जलती नौका पर तैनात सीमा शुल्क अधिकारी नौका के बाहरी छोर पर रस्सियों के सहारे जीवन मृत्यु के बीच झूल रहे थे कि आपने अपनी सीमा शुल्क विभागीय जीवन रक्षक छोटी सी नौका को तूफानी समुद्र में उतार दिया और अत्यधिक कठिनाइयों को झेलते हुए, सीमा शुल्क विभाग के 5 रक्षकों को जलती हुई नौका से बचा लिया। एक अन्य लापता अधिकारी की तलाश में आप पुनः तूफानी समुद्र में जीवन रक्षक नौका खेते हुए, अपने जीवन की चिंता न करते हुए, जलती हुई नौका तक पहुंचे, किंतु इस बार सफलता न मिली।

इस प्रकार श्री मोहम्मद सत्तार सोढ़ा ने अपने विभागीय साथियों के जीवन की रक्षा में अनुकरणीय साहस और कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

8. 3382222 नायक बलबीर सिंह, 2 सिख रेजिमेंट (भरणोपरांत)  
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 13 जुलाई, 1992)

13 जुलाई, 1992 की दोपहर बाद 2 बजकर 35 मिनट पर, पस्टन की सड़क सुरक्षा टोली अपना कार्य सम्पन्न करके गाड़ियों में आपस लौट रही थी कि एक तीव्र मोड़

पर ऊंचो जमीन से आतंकवादियों ने स्वचालित शस्त्रों से गोलियां चलानी शुरू कर दी। सबसे आगे के वन टन टूक, जिसमें नायक बलबीर सिंह थे, उसमें एक आतंकवादी ने हथगोला फेंका। मदैव चौकन्ता रहने वाले नायक बलबीर सिंह ने तत्काल उस गोले को उठाकर दूर सड़क पर फेंक दिया और साथी सैनिकों के जीवन की रक्षा की। यही नहीं वे ट्रक में कूद पड़े और व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता न करते हुए, आतंकवादियों पर जवाबी गोलियां चलाते हुए कांटेदार तार और दीवार के बीच होकर आतंकवादियों पर आक्रमण करने जा रहे थे कि एक गोली उनकी गर्दन में आ लगी। फिर भी उन्होंने अपनी गोलीबारी जारी रखी जिससे राष्ट्र विरोधी तत्वों ने पीठ दिखा दी। ऐसे में ही एक गोली अचानक उनके सर में आ लगी।

इस प्रकार नायक बलबीर सिंह ने अनुल पराक्रम और साहस के साथ आतंकवादियों से लड़ते-लड़ते अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया।

9. 1464992 लांस नायक ध्यान सिंह इंजीनियर्स (भरणोपरांत)  
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 जुलाई 1992)

20 जुलाई, 1992 को पंजाब के भद्ररुनी गांव में ज्वार के खेतों में छिपे चार दुर्गन्त आतंकवादियों की घेराबंदी के समय जब लांस नायक ध्यान सिंह के अधिकारी एक आतंकवादी द्वारा चलाई जा रही मशीनगन की गोलियों से खेतों में पड़ गए तो उस वीर लांस नायक ने अपना सुरक्षित स्थान छोड़कर, खुले खेत में आकर, अपने शस्त्र से आतंकवादियों पर गोली चलाकर उनका ध्यान अपनी ओर खींच लिया ताकि अधिकारी की रक्षा हो सके। इस बीच लांस नायक ध्यान सिंह आतंकवादियों की गोलीबारी से गम्भीर रूप से घायल हो गए। फिर भी उन्होंने एक दुर्गन्त आतंकवादी को अपने शस्त्र से निशाना बनाया और उसे नाकाब कर दिया। इस दौरान उन्हें आतंकवादी द्वारा चलाई गई और भी गोलियां लगीं जिससे बाद में वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इस प्रकार लांस नायक ध्यान सिंह ने अनुपम वफादारी, बीरता और कर्तव्यनिष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत किया।

10. 2586459 लांस नायक के० सुरेन्द्रन नायर, 18 मद्रास रेजिमेंट (भरणोपरांत)  
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 2 अगस्त 1992)

2 अगस्त 1992 को, बोपहर बाद दो बजे ग्राम उस्मान जिला तरन तारन, पंजाब में पुलिस और आतंकवादियों की एक मुठभेड़ हो रही थी जब पुलिस की सहायता के लिए, 18 मद्रास ने 4 जम्मू कश्मीर राइफल्स की एक प्लाटून के साथ उस क्षेत्र की घेरा-बंदी की। लांस नायक के० सुरेन्द्रन नायर ने देखा कि बने

सरकंडों से ठके जिस नाले में आतंकवादी छिपे हैं, उस ओर घने सरकंडों से ढका एक अन्य नाला भी जाता है। वे उसका उपयोग करते हुए आतंकवादियों के निकट पहुंचने वाले ही थे कि आतंकवादियों द्वारा शुरू की गई गोलीबारी से उनके पेट में गोलियां लगीं। गंभीर रूप से घायल हो जाने के बावजूद अपनी लाइट मशीन गन द्वारा अपनी कमर के पास से गोलियां बरसाते हुए वे आगे बढ़े और एक आतंकवादी को बुरी तरह घायल कर दिया। इस बीच लांस नायक नायर के सीने में कई गोलियां आ लगीं फिर भी उन्होंने आतंकवादी पर गोलियां चलाती जारी रखा और एक ऐसे आतंकवादी को मरणासन्न कर दिया जोकि भिड़वाला टाइगर फौर्स आफ खालिस्तान (सांघा गुट) का "अ" श्रेणी का खूंखार आतंकवादियों का और जिसे पकड़ने या मारने पर एक लाख रुपये का नकद पुरस्कार था। गंभीर घावों के कारण जब लांस नायक सुरेन्द्रन नायर मूर्च्छित होकर गिरे तो उनकी उंगली एल० एम० जी० के ट्रिगर पर थी। अंततः उन्हें वीरगति मिली।

इस प्रकार लांस नायक के सुरेन्द्रन नायर ने आतंकवादियों का मुकाबला करने में अदम्य साहस, असाधारण कर्तव्यपरायणता और विरल आत्म बलिदान की भावना का परिचय दिया।

11. मेजर राज कुमार, (आई० सी०-44179), 2 सिख रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 4 अगस्त, 1992)

4 अगस्त, 1992 को प्रातः काल 4 बजकर 40 मिनट पर जम्मू और कश्मीर के बड़गाम क्षेत्र में दो गांवों की घेराबंदी और तलाशी के दौरान आपकी कंपनी के जवानों पर राष्ट्र-विरोधी तत्वों ने भारी गोलीबारी की। अपने जवानों द्वारा जमावी गोलीबारी के दौरान, जब आप एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाकर उनका मनोबल बढ़ा रहे थे तो आपने लगभग 5.30 बजे बिलकुल पास की घनी झाड़ियों के बीच कुछ हलकत देखी। आपने झाड़ियों के बीच चले रहे राष्ट्र-विरोधी तत्वों को ललकारा और आत्म समर्पण के लिए कहा। तीन राष्ट्र-विरोधी तत्व उठ खड़े हुए और अपनी ए के 56 राइफलों के साथ, एकाएक आपकी ओर दौड़ पड़े। आप भी अपने शस्त्र के साथ जोश और निश्चय से उनकी ओर दौड़े जिससे वे सकते में आकर स्तब्ध रह गए और आपने तत्काल उन तीनों को मौत के घाट उतार दिया। उन मारे गए व्यक्तियों से तीन ए के 56 राइफलें, 6 मैगजीन और 135 कारतूस बरामद किए गए।

इस प्रकार मेजर राज कुमार ने राष्ट्र विरोधी तत्वों का मुकाबला करने में अनुपम शौर्य और अदम्य साहस का परिचय दिया।

12. श्री मुद्दबीर सिंह

13. श्रीमती आरती बाला

} गुरदासपुर, पंजाब

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 सितम्बर 1992)

11 सितम्बर, 1992 प्रातः काल 6 बजकर 20 मिनट पर श्री आतंकवादी ग्राम हल्ला जिला गुरदासपुर पंजाब में आपके

घर में घुस आए और आपके पिता के रिवाल्वर की जबरन मांग की। जब आप रिवाल्वर लाने के बहाने ऊपरी मंजिल पर गए और महायना की पुकार की तो एक आतंकवादी भी पीछे-पीछे आ गया और उन पर गोली चला दी। किंतु आपने बड़ी निर्भीकता से निहत्थे ही उस आतंकवादी पर वार किया जिसने उसका निशाना चूक गया। आपने छत पर पड़ी छड़ से आतंकवादी को मारा और उसकी विस्तीर्ण छीन ली। इधर, नीचे आपकी पत्नी श्रीमती आरती बाला ने दूसरे आतंकवादी को धर दबोचा और इस गुत्थम-गुत्था के कारण वह अपने शस्त्र को चला न सका। आपने आतंकवादी पर छड़ से पुनः प्रहार किया जिस से वह बेहोश होकर गिर पड़ा और बाद में उसकी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार श्री मुद्दबीर सिंह और श्रीमती आरती बाला ने अनुकरणीय साहस, शौर्य और सूझबूझ का परिचय देने हुए और अपने जीवन की भिता न करते हुए, आतंकवादियों से सफलतापूर्वक लोहा लिया।

14. 2974683 हवलदार वेदप्रकाश, 24 राजपूत रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 सितम्बर, 1992)

26 सितम्बर, 1992 को कश्मीर घाटी के कुपवाड़ा क्षेत्र में त्रिगेड स्तर पर चलाए जा रहे "बिद्रोह-विरोध अभियान" के दौरान एक गांव के दो मंजिला मकान से 24 राजपूत की "तत्काल प्रतिक्रिया टोली" पर आतंकवादियों ने स्वचालित शस्त्रों से गोलीबारी की। उसी समय आस-पास के मकानों के खेतों से भी सैनिकों पर गोलीबारी होने लगी। मारी सैन्य गतिविधियां ठप्प हो गईं। हवलदार वेद प्रकाश स्थिति का सैन्य मूल्यांकन करते हुए लगभग 10 गज दूर से गोली चला रहे आतंकवादी पर झपट पड़े। उस आतंकवादी ने भी हवलदार वेद प्रकाश पर गोलियों की बौछार की, जिससे वे बुरी तरह घायल हो गए। फिर भी, उन्होंने उस आतंकवादी पर झपटते हुए अपने शस्त्र से गोलियों की बौछार की और उसे मार गिराया। इससे उनके साथी सैनिकों के आगे बढ़ने का मार्ग खुल गया किन्तु वे स्वयं उसी स्थान पर वीरगति को प्राप्त हुए। उनका शव मरे हुए आतंकवादी के शव के ऊपर प्रहार करने की स्थिति में पाया गया।

इस प्रकार हवलदार वेद प्रकाश ने असाधारण शौर्य, अनुकरणीय सूझबूझ और पहलशक्ति तथा जुझारू भावना का परिचय दिया।

15. 4177463 सिपाही दशरथ, 13 कुमाऊं रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 01 अक्टूबर, 1992)

01 अक्टूबर, 1992 को कश्मीर घाटी के एक गांव में घेराबंदी और तलाशी के दौरान सिपाही दशरथ और उनके साथियों पर सेब के बाग से गोलियों की घुसाधार



वर्षा हुई। अपनी ही पहल पर और दृढ़ निश्चय के साथ अपने शस्त्र से गोलियां चलाते हुए सिपाही दशरथ ने आतंकवादियों के मोर्चे पर अकेले ही धावा बोल दिया। इससे आतंकवादी घबराकर अपना मोर्चा और एक शस्त्र छोड़ कर भाग खड़े हुए। किंतु एक अन्य मोर्चे से आतंकवादियों के एक दूसरे दल ने सिपाही दशरथ पर गोलियां चलाई जिससे उन्होंने वीरगति पाई। सिपाई दशरथ के धावा बोलने से और आतंकवादियों के मोर्चा छोड़कर भाग जाने से अनेक कुमाऊंजी सैनिक हताहत होने से बच गए।

इस प्रकार सिपाही दशरथ ने साहस एवं पहलुशक्ति का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

16. जे० सी०-192929 नायब सूबेदार मरनाम सिंह शर्मा, 24 राजपूत रेजिमेंट (मरणोपरांत)।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 अक्तूबर, 1992)

15 अक्तूबर, 1992 को जम्मू और कश्मीर में कुपवाड़ा जिले के तंगवाडी ग्राम में सुबह लगभग साढ़ेपांच बजे 24 राजपूत के एक दस्ते द्वारा घेराबंदी और तलाशी अभियान में, एक झोपड़ी से आतंकवादियों ने गोलियां चलानी शुरू कीं। स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए नायब सूबेदार शर्मा उस ओर बढ़ रहे थे कि अचानक बस मीटर के फासले से आतंकवादियों ने अंधाधुंध गोलियां चलानी शुरू कर दीं। अपने जवानों की जीवन रक्षा के लिए नायब सूबेदार शर्मा ने व्यक्तिगत सुरक्षा की रचना भी परवाह न करते हुए आतंकवादियों पर अपने शस्त्र से गोलियों की बौछार करते हुए धावा बोल दिया और उनमें से दो को तत्काल मार गिराया। पास ही छिपे तीसरे आतंकवादी ने नायब सूबेदार शर्मा पर गोलियां चलाई जिससे वह बुरी तरह घायल हो गए और कुछ समय बाद वीरगति को प्राप्त हुए।

उन्होंने अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान देकर अदम्य साहस, अनुपम वीरता और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

17. 2882645 राइफलमैन नेत्रभान सिंह, 11 राजपूताना राइफल्स (मरणोपरांत)।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 अक्तूबर, 1992)

22 अक्तूबर, 1992 को कश्मीर घाटी के ग्राम मुरा पुलवाना में घेराबंदी और तलाशी कर रहे प्लाटून पर जब राष्ट्र-विरोधी तत्वों ने गोलियां बरसाई तो राइफलमैन नेत्रभान सिंह और उनके मेक्शन अफसर घायल हो गए। घायल होने के बावजूद अपने अन्य साथियों को संभावित खतरे से बचाने के लिए अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता न करते हुए, वीर राइफलमैन नेत्रभान सिंह राष्ट्रविरोधी तत्वों पर अपट पड़े और एक को तत्काल मार गिराया। उससे ए० के० 56 राइफल, मैगजीन और गोली बारूद बरामद किया। उसी समय हो रही भयंकर गोलीबारी में राइफलमैन नेत्रभान सिंह ने पराक्रम से लड़ने हुए वीरगति पाई।

इस प्रकार राइफलमैन नेत्रभान सिंह ने उत्कृष्ट साहस और वीरता से राष्ट्रविरोधी तत्वों से लड़ते हुए अपने जीवन का बलिदान किया।

18. जे० सी०-161012 सूबेदार चैन लाल, 17 जम्मू और कश्मीर राइफल्स (मरणोपरांत)।

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 2 नवम्बर, 1992)

2 नवम्बर, 1992 को सतसरी क्षेत्र में पन्टन की एक टुकड़ी द्वारा घात लगा कर आतंकवादियों को पकड़ने की कार्यवाही में दोतरफा गोलीबारी के दौरान अपने एक गैर कमीशन अफसर के घायल हो जाने के बाद सूबेदार चैन लाल, पहल करते हुए, अत्यंत संकरे रास्ते से आतंकवादियों की ओर बढ़ रहे थे कि गोली लगने से घायल हो गए। घायल होने पर भी उन्होंने अस्पताल जाना अस्वीकार कर दिया और अपने जवानों का मनोबल बढ़ाते हुए उन्होंने आतंकवादियों पर दबाव जारी रखा जिससे अभियान सफल रहा और अंततः दो आतंकवादी मारे गए। सूबेदार चैन लाल को हेलीकाप्टर से अस्पताल ले जाया गया किंतु घाव और रक्त स्राव के कारण उन्होंने मार्ग में ही वीरगति पाई।

19. विंग कमांडर विमान कुमार अरोड़ा (12954) उड़ान (पायलट)

20. स्क्वाड्रन लीडर अनिल कुमार गुप्ता (17007) उड़ान (पायलट)

21. 1661178 साजेंट रमेश चन्द, फ्लाइट गनर।  
(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 नवम्बर, 1992)

121 हेलिकाप्टर फ्लाइट जिसके आप तीनों सदस्य हैं तेल और प्राकृतिक गैस आयोग को, बम्बई हाई के समुद्र पर संभरण पोषण के लिए है। अपने कार्य से संबंधित समुद्र से तट की ओर वापसी उड़ान में जब हेलिकाप्टर समुद्र के ऊपर ही था कि आपात स्थिति पैदा हो गई और हेलिकाप्टर समुद्र में जा गिरा। कॉकपिट में पानी भर गया और बड़ी कठिनाई से विंग कमांडर अरोड़ा और स्क्वाड्रन लीडर गुप्ता बाहर निकले। साजेंट रमेश चन्द ने अपनी सुरक्षा की चिंता न करते हुए सात-आठ यात्रियों को हेलिकाप्टर से बाहर निकालने में और हेलिकाप्टर से फेंकी गई जीवन रक्षा नौका तक पहुंचने में सहायता की। आप स्वयं हेलिकाप्टर से तब बाहर आए जब पानी आपके गले तक पहुंच गया।

विंग कमांडर अरोड़ा ने एक यात्री को डूबते-उतराने देखा। वे जल्दी तैरकर उसके पास पहुंचे। उन्माद और उत्तेजना में उस यात्री ने विंग कमांडर अरोड़ा को पानी के अन्दर खींचना चाहा जिससे आपको चोट भी आई। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता न करते हुए और असाधारण वीरता का परिचय देते हुए आपने उस यात्री को डूबने से बचा लिया। इसी प्रकार एक अन्य यात्री को भी आपने जीवन रक्षा की।

कॉकपिट से बाहर आने के बाद स्क्वाड्रन लीडर गुप्ता ने एक यात्री को जीवन और मरण के बीच डूबते-उतराने देखा और उसे बचाया। इसी प्रकार डूबते हुए फ्लाइट इंजीनियर को भी आपने अपनी जान जोखिम में डालकर तब तक पानी के ऊपर तैराये रखा जब तक कि सहायता नहीं पहुंच गई।

निस्वार्थ भाव, असाधारण साहस और मृत्यु से जड़ने हुए जीवन वान देकर अनुकरणीय शौर्य का ज्वलंत उदाहरण आप तीनों ने प्रस्तुत किया।

22 2870829 हवलदार भीम सिंह, 7 राजपूताना राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 14 नवम्बर, 1992)

13 नवम्बर, 1992 को हवलदार भीम सिंह और उनके मेक्शन के जवान आतंकवादियों की तलाश के दौरान अंचाई पर, चट्टानों के पीछे छिपे, आतंकवादियों द्वारा की गई गोली-बारी में फंस गए। फिर भी, हवलदार भीम सिंह अपने जवानों को सफलतापूर्वक सुरक्षित वापस पलटन में लाए।

दूसरे दिन, वे अपने जवानों के साथ स्वेच्छा से उस घने जंगल की पहाड़ी पर आतंकवादियों को पकड़ने के निश्चय से, एक अन्य कठिन मार्ग से गए। तीन आतंकवादियों से आमना-सामना होने पर हवलदार भीम सिंह ने स्वयं अपनी गोलियों के अचूक निशाने से दो आतंकवादियों को मौत के घाट उतार दिया। जब वे और उनके साथी सैनिक तीसरे आतंकवादी की खोज में शिखर की ओर बढ़ रहे थे तो एक शिला की ओट से, केवल 25 मीटर की दूरी से उस आतंकवादी ने हवलदार भीम सिंह के बाएं कंधे और हाथ पर गोलियां चलाकर उन्हें बुरी तरह घायल कर दिया। फिर भी, दृढ़ निश्चय के साथ वे आगे बढ़े और अपनी राइफल से तीसरे आतंकवादी को भी मार गिराया। दुर्भाग्यवश इस भीषण गहमागहमी में हवलदार भीम सिंह फिमल कर 200 मीटर नीचे खड्ड में जा गिरे और वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्रवाई में हवलदार भीम सिंह ने अनुकरणीय साहस, शौर्य और नेतृत्व का परिचय देते हुए उस दिन उस स्थान पर आतंकवादियों का सफाया कर दिया।

23. जी/129367—एक्स ड्राइवर यांत्रिक उपस्कर, गोपाल सिंह

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 नवम्बर, 1992)

आप अरुणाचल प्रदेश में 20 नवम्बर, 1992 को मिगिंग टूटिंग मार्ग पर टूटिंग की ओर पहाड़ की कटाई के कार्य के लिए अपने डोजर पर तैनात थे।

इस कटाई में रिगांग नदी एक प्रमुख बाधा बन गयी थी। आप पहाड़-कटाई अत्यंत निष्ठा और दृढ़ निश्चय से करते हुए, जब तेज बहती हुई रिगांग नदी की मध्यधारा में पहुंचे तो पानी के बहाव में आती हुई बड़ी बड़ी चट्टानों ने, न केवल आपका मार्ग अवरोध कर दिया, अपितु डोजर के क्षतिग्रस्त हो जाने का भी खतरा उत्पन्न हो गया। ऐसी विपम परिस्थिति में आप अपनी सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए तेज धारा और शिलाखंडों से टकराने हुए 40 मिनट तक अपने डोजर को कुशलता पूर्वक चलाते हुए रिगांग के उस पार डोजर और कांप्रेसर सहित पहुंचने में सफल हुए, जिससे पहाड़ कटाई का काम सुचारु रूप से समय पर सम्पन्न हुआ।

यांत्रिक उपस्कर चालक गोपाल सिंह ने खतरनाक स्थिति का सामना करने में अदम्य साहस एवं कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

24. फ्लाइट लेफ्टिनेंट अनुराण सलूजा (19152) फ्लाईंग पायलट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 नवम्बर, 1992)

26 नवम्बर, 1992 को एक अभ्यास आक्रामक उड़ान के दौरान जब आप अपने लड़ाकू विमान को गोल कर रहे थे तो एकाएक चेतवनी की बतियां जल उठीं और इंजन तंत्र में विरोधाभास की डगमगाहट इतनी भयंकर थी कि पायलट द्वारा विमान को छोड़कर पैराशूट के सहारे कूद जाना उचित माना जाता। फिर भी आपने ऐसा न करके अत्यंत शांत और स्थिर मन से विमान को नियंत्रण में किया। फिर बेतारयंत्र और अन्य महत्वपूर्ण उपकरणों की विकल्पता के कारण आपने पाया कि धरती पर उतरने समय ब्रेक, दिशा निर्देश आदि की सुविधा न उपलब्ध होगी। एक साथ इतनी अधिक आपात स्थितियों के कारण किसी भी क्षण लड़ाकू विमान नियंत्रण से बाहर जा सकता था, विस्फोट होकर नष्ट हो सकता था। दुर्घटनाग्रस्त हो सकता था। ऐसी विपम परिस्थिति में जब विमान छोड़ कर कूद जाना हितकर होता तब भी आपने ऐसा नहीं किया और अपनी सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए एक मूल्यवान विमान को बचाया।

यही नहीं जांच पड़ताल के दौरान ऐसी महत्वपूर्ण तकनीकी बातें बताईं जिससे भविष्य में ऐसी आपात स्थितियों से निपटने में सहायता मिलेगी।

इस प्रकार फ्लाइट लेफ्टिनेंट अनुराण सलूजा ने दृढ़ निश्चय, स्थिर मन और अनुपम साहस का ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत किया।

25. 2974046 हवलदार रक्षपाल सिंह 27 राजपूत रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 28 नवम्बर, 1992)

28 नवम्बर, 1992 को जम्मू और कश्मीर के एक गांव में 27 राजपूत के हवलदार रक्षपाल सिंह और उनके साथी जवान तलाशी के लिए एक घर में घुसे तो एक छिपे हुए दुर्बल आतंकवादी ने ए०के० 56 राइफल से गोलियां चलाईं जो उनके पेट में लगीं। बुरी तरह घायल होने के बावजूद उन्होंने दृढ़ निश्चय के साथ जबाबी गोलियां चलाकर आतंकवादी को भी बुरी तरह घायल कर दिया। इन पर वह आतंकवादी जब उनके सैनिकों पर हथगोला फेंकने वाला था तो हवलदार सिंह ने बिजली की सी तेजी से साथी सैनिकों को सुरक्षित स्थान पर धकेल दिया और हथगोला फटने से पूर्व स्वयं भी सुरक्षित स्थान पर आ गए।

उनकी तत्परता और सामयिक कार्यवाही से उनके साथियों की जान बची। उसी घर में, उसी आतंकवादी ने हवलदार रक्षपाल मिह का फिर मुठभेड़ हुई और उस वीर हवलदार ने शौर्य और पराक्रम से आतंकवादी का काम तमाम कर दिया। बाद में गंभीर घावों के कारण वे स्वयं वीरगति को प्राप्त हुए।

हवलदार रक्षपाल मिह ने अत्यन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में अदम्य साहस और कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

26. 13742215 नायक झलमन दाम, 20 जम्मू और कश्मीर राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 दिसम्बर, 1992)

26 दिसम्बर, 1992 के दिन जब नायक झलमन दाम सियाचिन में दर्शक और जुलू चौकियों के बीच चलते हुए संपर्क टोली का नेतृत्व कर रहे थे तो रात में लगभग 11 बजे भीषण हिम स्खलन हुआ और पूरी टोली पर बर्फ का पहाड़ टूट पड़ा।

यद्यपि टोली के सभी सैनिक बर्फ में दब गए थे फिर भी भीमायक झलमन दाम ने अपना धीरज और साहस न खोते हुए अपने को बर्फ से बाहर निकाला, रेग कर पास पड़े रेडियो सेट पर दुर्घटना की सूचना कंपनी कमांडर को दी और अन्य साथियों को बचाने के लिए स्वयं अपने हाथों में बर्फ हटाने लगे। बचाव दल के आने पर उन्होंने स्वयं प्रार्थनाक उपाचार तैयार करवाकर दिया और अन्य सैनिकों को बचाने का निर्देश दिया। इस बीच अत्यधिक ठण्ड, भयंकर तुफान-ग्रस्त आग, और दोनों टांगों की हड्डियों के टूटने में नायक झलमन दाम की मृत्यु हो गई।

नायक झलमन दाम ने अपने साथी सैनिकों की जीवित रक्षा में अपने प्राणों की आहुति दे दी।

27 जी/167913—एच पाइनियर ब्रज बिहारी (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 दिसम्बर 1992)

सियाचिन, श्योक आदि सीमावर्ती क्षेत्रों में रक्षा कार्य में लगी भारतीय सेना के लिए नद्दाख में लेह चालुका मार्ग एक जीवन रेखा है। सर्दियों के मौसम में शून्य से 40° नीचे तापमान में हिम-स्खलन, हिमपात और झटकावात के बीच पाइनियर ब्रज बिहारी सड़क से बर्फ हटाने के काम में अपने साथी पाइनियर चन्द्र प्रकाश के साथ डोजर ऑपरेटर की सहायता कर रहे थे कि एक बर्फ की चट्टान ऊपर से टूट कर आई और पाइनियर चन्द्र प्रकाश उसमें गले तक धम गए और उसी हावा में महावत के लिए पुकारने लगे। खतरे के बीच, अपनी सुरक्षा की चिंता न करते हुए पाइनियर ब्रज बिहारी अपने साथी की सहायता के लिए दौड़े और उसे बचाने में सफलतापूर्वक संलग्न थे कि एक अन्य हिम-स्खलन के बहाव में वे 800 मीटर नीचे गिर कर सघन बर्फ में दब गए और उनका प्राणान्त हो गया।

कर्तव्यनिष्ठा और भ्रातृत्व भाव से प्रेरित होकर पाइनियर ब्रज बिहारी ने अपने साथी की रक्षा में अपने प्राण निछावर कर दिए।

28. मेजर राजू थुडियाथु जॉर्ज (आई० सी०-36616) आर्टिलरी (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 जनवरी, 1993)

23 जनवरी, 1993 को मेजर राजू थुडियाथु जॉर्ज जम्मू और कश्मीर के बिजबिहारा कस्बे में जब सड़क सुरक्षा के लिए तैनात थे, एक मेजर जनरल की कार पर राष्ट्र विरोधी तत्वों ने भारी गोलीबारी शुरू की। मेजर जॉर्ज ने तत्काल एक प्लाटून के साथ राष्ट्रविरोधी तत्वों को घेर कर पकड़ने या मार डालने की कार्यवाही शुरू की, कि वे सब भाग निकले और सेलम नदी पार करके दूसरे तट पर पहुंच गए। उन्होंने योजनाबद्ध तरीके से नदी पार करके राष्ट्र विरोधी तत्वों पर गोलीबारी में दबाव डाला, और उनका पीछा कर ही रहे थे कि उधर से आती यूनिवर्सल गन की गोलीया उनकी गर्दन पर लगी और वे गिर गए। फिर भी उन्होंने अपने जवानों को चल रही कार्यवाही में प्रोत्साहित किया, स्वयं अस्पताल जाता अस्वीकार किया और नेतृत्व प्रदान करने रहे। उनके साहसिक नेतृत्व में दहना से लड़ते हुए, राष्ट्रीय राइफल के जवानों ने कई उपद्रवियों को मार गिराया और अनेक को घायल किया। इस मुठभेड़ में लगे घावों के कारण मेजर जॉर्ज ने वीरगति पाई।

मेजर राजू थुडियाथु जॉर्ज ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना अनुकरणीय वीरता, अदम्य साहस और उच्चकारि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

29 जी/171789—के.ए.परेटर उत्कलन मशीनरी, मुकेश कुमार (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 7 फरवरी, 1993)

6/7 फरवरी, 1993 की रात भीषण वर्षा और हिमपात से सिकिकम में लाचेन-कालेप मार्ग, भू-स्खलन से अवरुद्ध हो गया। महत्वपूर्ण रक्षा कार्य में लगा हुआ सेना यातायात, ठप्प हो गया। गिरती चट्टानों, वर्षा और बर्फ की चिंता न करते हुए ओ० ई० एम० मुकेश कुमार साहस, उत्साह और दृढ़ संकल्प के साथ अपने डोजर से सड़क साफ करने के काम में निरंतर लगे रहे। जब वे अपना काम सफलतापूर्वक सम्पन्न करने ही वाले थे कि अचानक एक शिलाखंड उनकी गर्दन और कंधों पर आ गिरा जिससे उनका वही निधन हो गया।

अपने प्राणों की आहुति देकर उन्होंने राजमार्ग को महत्वपूर्ण सैन्य यातायात के लिए खोलने में अदम्य साहस, असाधारण कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

30. जी०ओ०-1805-ए, असिस्टेंट इंजिनियर (सिविल)  
श्री एम० आर० जी० कुरुप (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 26 फरवरी, 1993)

सीमा सड़क संगठन के प्रोजेक्ट "बीकन" के अन्तर्गत श्री एम० आर० जी० कुरुप जम्मू और कश्मीर में राष्ट्रीय राजमार्ग 1-अ के रामबन-बनिहाल खण्ड की देखरेख और मरम्मत के लिए उत्तरदायी थे। 25/26 फरवरी, 1993 को भारी हिमपात और वर्षा के कारण हुए भू-स्खलन से सड़क साफ करने के लिए अपने दो डोजर और कर्मचारियों के साथ वे स्वयं उस स्थल पर लगन, निष्ठा और दृढ़ निश्चय के साथ कार्यरत थे ताकि सड़क को वाहन यातायात के लिए शीघ्र खोला जा सके। अचानक एक सीधी खड़ी चट्टान सड़क पर फिर आ गिरी। एक शिलाखंड सीधा श्री कुरुप की गर्दन पर गिरा जिससे उनका तत्काल निधन हो गया।

विषम परिस्थिति में अपनी सुरक्षा की रचना भी परवाह न करते हुए निपुणता से जुझते हुए श्री कुरुप ने असाधारण साहस और उच्च कोटि की कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया।

31. 4064091 लांस नायक चन्द्र बल्लभ, 10 गड़वाल राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 30 मार्च, 1993)

30 मार्च, 1993 को कश्मीर घाटी में श्रीनगर के निकट शंकर पोरा क्षेत्र में एक आतंकवादी-अड्डे पर 10 गड़वाल राइफल्स के कमान अफसर के नेतृत्व में सैन्य टोली द्वारा छापा मारने के दौरान, पहले से भली भांति छिपे हुए राष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा केवल 20 गज की दूरी से चलाई गयी गोली से आप घायल हो गए। घायल होकर धरती पर गिरने से पहले आपने अपने शस्त्र से राष्ट्र विरोधी तत्वों पर गोलियां चलाई और उनमें से एक को वहीं मार गिराया। आपके दाहिने घुटने से बहुत अधिक खून बहते रहने के बावजूद आपने रेंगते हुए पैतरा बदला और देखा कि आपके कमान अफसर जो आपकी ओर आ रहे थे उन पर दो राष्ट्र विरोधी तत्व निशाना साध रहे थे। आप अपनी सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए तत्काल छड़े हो गए और जोर से आवाज लगा कर कमान अफसर को सूचित किया और साथ ही उन छिपे हुए और निशाना साध रहे राष्ट्र विरोधी तत्वों पर गोलियों की बौछार करके उनमें से दो का काम तमाम कर दिया। शिनाख्त करने पर पाया गया कि ये दोनों आतंकवादी हिजबुल मुजाहिदीन गुट के सरगना थे।

इस प्रकार नायक चन्द्र बल्लभ ने राष्ट्र विरोधी तत्वों से मुकाबला करने में अदम्य साहस, दृढ़ निश्चय और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

32. 8032514 सिपाही जनक सिंह, सीमा सड़क संगठन

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 मार्च, 1993)

31 मार्च, 1993 को प्रातःकाल 3 बजे आप अपने एक साथी के साथ 370 रोड मेन्टेन्स प्लाटून के एक संतरी पोस्ट पर,

जो राष्ट्रीय राजमार्ग, लोअर मुझा, जम्मू और कश्मीर में स्थित था, पहरा दे रहे थे। एकाएक तीस-चालीस राष्ट्र विरोधी तत्व पहाड़ की ऊंचाइयों से गोलियां चलाने हुए आए और दोनों संतरियों से आत्म-समर्पण के लिए कहा। इतनी अधिक संख्या में राष्ट्र विरोधी तत्वों को देखकर भी आप विचलित नहीं हुए। आपने तुरंत अपनी राइफल से मूकबूझ और नियंत्रण के साथ राष्ट्र विरोधी तत्वों की 100 गोलियों का जबाब केवल 13 गोलियों से, निशाना साध कर दिया, क्योंकि आप के पास एम्पु-निशन कम था। आपको इस जवाबी कार्रवाई से राष्ट्र विरोधी तत्वों ने पीठ दिखा दी।

आपने अपने कर्तव्य का पालन करते हुए अनुकरणीय साहस, और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया और आप अपने साथियों की रक्षा करने में सफल रहे।

33. सेकंड लेफ्टिनेंट सुरेश राधा कृष्णन (आई० सी०-50427), 11 राजपूताना राइफल्स

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 9 अप्रैल, 1993)

9 अप्रैल, 1993 को, 11 राजपूताना राइफल्स जम्मू और कश्मीर में बड़गाम जिले के पोहर गांव में घेराबंदी और तलाशी पर नियुक्त थी। उस समय आप की कमान में पल्टन का कमांडो प्लाटून आतंकवादियों की प्रभावी गोलीबारी बने आ गया अवसर का लाभ उठाते हुए आतंकवादियों के दो गिरोह एक दूसरे को कवरीय फायर प्रदान करते हुए, घेरा तोड़कर निकल भागने का प्रयास कर रहे थे कि आपने अपने कमांडो साथी सैनिकों की प्रभावी गोलीबारी से उन आतंकवादियों की नाकेबंदी की और स्वयं कुछ कमांडो सैनिकों के साथ पैतरा बदलते हुए आतंकवादियों का रास्ता रोकते रहे और गोलियां चलाते रहे। लेफ्टिनेंट सुरेश राधा कृष्णन ने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की रचना भी चिन्ता न करते हुए, बार-बार उठकर और दौड़कर, भीषण गोलीबारी के बीच, पैतरा बदलते हुए स्थान बदला और अंततः आतंकवादियों की ओर झपटते हुए, स्वयं अकेले ही, उनमें से दो को वहाँ, उसी समय मौत के घाट उतार दिया।

इस कार्रवाई में सेकंड लेफ्टिनेंट सुरेश राधा कृष्णन ने आतंकवादियों की गोलियों का मुकाबला करते हुए असाधारण साहस, दृढ़-निश्चय, पहल-शक्ति और उच्चकोटि के नेतृत्व का परिचय दिया।

34. कप्टन वेलांकि सेवा साई (आई० सी०-49857), सेना शिक्षा कोर (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 अप्रैल, 1993)

15 अप्रैल, 1993 को प्रातः सात बजे जम्मू और कश्मीर के सोपोर नगर में, जब ब्रिगेड आफ द गार्ड्स की 5वी बटालियन

घेराबन्दी और तलाशी अभियान के दौरान आतंकवादियों की प्रचुक गोलीबारी तले आई तो स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए पर्वतीय ब्रिगेड कमांडर घटना स्थल की ओर अपने ब्रिगेड शिक्षा अधिकारी, कैप्टन वेलाकि सेषा साई के साथ रवाना हुए। उस दिन प्रातः साढ़े नौ बजे फलमंडी के चौराहे पर कमांडर की अगली संरक्षी गाड़ी पर 35-40 आतंकवादियों ने घात लगाकर आक्रमण किया और यूनिवर्सल मशीनगन, राकेट लांचर, एम 16 और ए० के० राइफलों से गोलीबारी की। अपने साथी सैनिकों को उस विकट स्थिति से उबारने के लिए, कैप्टन साई, पांच जवानों के साथ आतंकवादियों पर गोलियां बरसाते हुए उधर लपके। इस बीच, हथगोला फटने से सैनिक गाड़ी धू-धू कर जलने लगी। उसमें फंसे दो घायल जवानों को जलने से बचाने के लिए, गोलियों की बोछार के बीच कैप्टन साई दृढ़ निश्चय के साथ जलती हुई गाड़ी में गए और एक जवान को जो तब तक वीरगति प्राप्त कर चुका था, बाहर निकाला। कैप्टन साई एक बार फिर जलती हुई गाड़ी में गए और एक बुरी तरह घायल जवान को सुरक्षित स्थान तक ला रहे थे कि आतंकवादियों द्वारा ए० के० 47 राइफल से चलाई गई गोलियां उनके सिर में लगी और वे वही वीरगति को प्राप्त हुए।

इस मुठभेड़ में कैप्टन वेलाकि सेषा साई ने अदम्य साहस, चुनौतीपूर्ण नेतृत्व का परिचय देकर मशहूर आतंकवादियों का मुकाबला करने हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

35. 2877958 नायक राम कुमार, राजतूना राइफल (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख 15 अप्रैल, 1993)

15 अप्रैल, 1993 को जम्मू और कश्मीर के सोपोर नगर के फलमंडी चौराहे पर एक पर्वतीय ब्रिगेड कमांडर का संरक्षी वाहन, आतंकवादियों द्वारा घात लगाकर किए गए आक्रमण में फंस गया। इस संरक्षी वाहन में ब्रिगेड मुख्यालय के नायक राम कुमार ने अपने साथियों के साथ, आतंकवादियों द्वारा की जा रही यूनिवर्सल मशीनगन, राकेट लांचर, एम-16 और ए० के० राइफलों की भयंकर गोलीबारी के जबाब में प्रभावी गोलीबारी की। आतंकवादियों द्वारा फेंके गए हथगोले के फटने से जल रहे संरक्षी वाहन से साथियों को बाहर निकालने में, नायक राम कुमार द्वारा की गई गोलीबारी से सहायता मिली। इस भीषण गोलीबारी में अदम्य साहस और दृढ़ निश्चय का परिचय देने हुए नायक राम कुमार शिला समान अडिग रहे। घायल हो जाने के बावजूद भी अंतिम सांस तक लड़ते रहे। जलते हुए संरक्षी वाहन में ही उन्होंने वीरगति पाई।

इस प्रकार नायक राम कुमार ने आतंकवादियों से लड़ने में अनुपम साहस, नेतृत्व के गुणों का परिचय देने हुए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया।

36. पैटी आफिसर एयर फिटर (विशेष ड्यूटी) अजय कुमार थापा (146043-टी)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 अप्रैल, 1993)

17 अप्रैल, 1993 को सायंकाल लगभग 7 बजे, तमिलनाडु के जगदापत्तिनम् गांव में आग की ऊंची उठती लपटें देखकर पैटी आफिसर अजय कुमार थापा, जोकि पेट्रोलिंग ड्यूटी पर थे, ने जोर-जोर से आवाज लगाई और गांव की ओर दौड़े। एक झोंपड़ी में आग लगी थी और आस-पास की अन्य झोंपड़ियों तक आग पहुंचने का खतरा था। यह देखकर कि ग्रामवासी हन्रप्रम हैं और आग बुझाने की कार्यवाही से उदासीन हैं आप एक गोबो चट्टाई ओढ़कर जनती हुई झोंपड़ी में घुस गए और आग को लपटों से बिरे दो निरोह बच्चों को बाहर निकाल लाए।

जनती हुई झोंपड़ी को आग को फैलने से रोकने के लिए अन्य कोई मार्ग न सूझने पर आप अपनी जान पर खेलकर पुनः अंदर गए और बाम की बलियों आदि को खींच कर जमीन में। गिरा दिया और जलते हुए फूस को बुझा दिया। अपनी इस साहस-पूर्ण और सामयिक कार्यवाही से अपनी जान पर खेलकर आपने दूसरी झोंपड़ियों को तथा पाम रखे डीजल ड्रम और मरम्मत की जा रही नौकाओं को बचा लिया।

पैटी आफिसर एयर फिटर (विशेष ड्यूटी) अजय कुमार थापा ने अपनी सुरक्षा को परवाह किए बिना गांववालों को जान-माल की हिराजत करने से अदम्य साहस और असाधारण सूझबूझ का परिचय दिया।

37. 1573540-ए सैपर/आपरेटर उत्खनन मशीनरी, शहजाद खान (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 20 अप्रैल, 1993)

लेह मनाली मार्ग पर उषगी-सरचू क्षेत्र में तंगलांग ला के निकट सत्रह हजार पांच सौ बयासी फीट की ऊंचाई पर विषम परिस्थितियों और प्रतिकूल मौसम में 20 अप्रैल, 1993 को सैपर/ओ० ई० एम० शहजाद खान अपने डोजर से बर्फ हटाने का काम कर रहे थे, जब सड़क के किनारे की दावार उड़ जाने से डोजर घाटी की ओर लुढ़कने वाला हो था कि उन्होंने साहस और सूझबूझ से उसे ऊपर की ओर मोड़ा। इससे उनकी और दो अन्य साथियों की जान बची और डोजर नष्ट होने से बच गया।

उसी मार्ग पर, एक अन्य स्थान पर सड़क पर 40 फीट ऊंची बर्फ हटाने के लिए वे स्वेच्छा से आगे आए। यद्यपि इस कार्य में उनकी जान जाने का भय था फिर भी, वे जरा सा भी नहीं सहमे। बर्फ हटाते-हटाते थोड़ी देर में डोजर का ट्रैक फिसलने लगा और डोजर उलटने की स्थिति में हो गया। फिर

भी उन्होंने भरसक प्रयास किया कि डोजर गिर कर नष्ट न हो जाए। इसी प्रयास के दौरान वे गिर कर अपने ही डोजर तले कुचले गए और उनकी बही मृत्यु हो गई।

सैपर/ओ० ई० एम० शहजाद खान ने अपनी जान की बाजी लगाकर अदम्य साहस और कर्तव्य के प्रति समर्पण भावना का परिचय दिया।

38. 13742820 लास नायक नेक सिंह,  
2 जम्मू और कश्मीर राइफलस

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 5 मई, 1993)

5 मई, 1993 को कश्मीर घाटी के अनंतनाग जिले में काजीगुंड क्षेत्र में लगभग 2600 मीटर ऊंची पहाड़ी पर हिजबुल मुजाहिदीन गुट के आतंकवादियों को पकड़ने के लिए कठिन चढ़ाई चढ़कर, आप और पलटन के एडजुटेंट रेंगते हुए आतंकवादियों के बंकर के पास पहुंचे। लगभग 20 मीटर दूर चार सशस्त्र आतंकवादी एकाएक आपको वहां देखकर सकते में आ गए। आपने तथा एडजुटेंट ने चार आतंकवादियों को आनन-फ़ानन में मार गिराया। निकट के एक अन्य बंकर से अन्य आतंकवादियों ने जब गोलीबारी शुरू की, तब आपने एडजुटेंट के साथ गोलियां चलाते हुए तेजी से धावा बोल दिया और दो अन्य को मौत के घाट उतार दिया। आपने उस स्थान से 6 ए के 56 राइफलस, 16 मैगजींस, 440 गोलियां बतीन हथगोले बरामद किए। आपने पराक्रम, साहस और सहयोग का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

इस कार्रवाई में बिषम परिस्थितियों का सामना करते हुए लास नायक नेक सिंह ने अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

39. 13751542 राइफलमैन राजेश्वर सिंह,  
2 जम्मू और कश्मीर राइफलस (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 मई, 1993)

12 मई, 1993 को जम्मू एवं कश्मीर के पुलवामा क्षेत्र में घेराबंदी और तलाशी के दौरान दो राष्ट्र विरोधी तत्वों को घेरा तोड़ कर भागते हुए देखकर राइफलमैन राजेश्वर सिंह ने अपने साथियों के साथ उनका पीछा किया। उन दोनों आतंकवादियों ने कुछ दूरी पर मोर्चा संभाला और गोलीबारी शुरू की। राइफलमैन राजेश्वर सिंह चुपचाप रेंगते हुए दोनों आतंकवादियों

के निकट पहुंचे और उनकी गोलियों की बौछार के बीच उन पर धावा बोलते हुए दोनों आतंकवादियों का वहीं मार गिराया। आतंकवादियों ने उन्होंने 2 ए के 56 राइफलें और बहुत सा गोली-शरूद बरामद किया। इस मुठभेड़ में राजेश्वर सिंह वीरतापूर्वक लड़े किन्तु गोलियों के धाव और रक्त स्राव के कारण वीरगति को प्राप्त हुए।

अपनी मुरता की परवाह किए बिना राइफलमैन राजेश्वर सिंह ने अमाधायण साहस, कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देते हुए भारतीय सेना का सर्वोच्च परम्परा के अनुकूल अपने प्राणों का बलिदान कर दिया।

40. लेफ्टिनेंट हरजिंदर पाल मिह धामी  
(आई० मां०-50621) राजपूत रेजिमेंट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 जून, 1993)

27 जून, 1993 को जम्मू और कश्मीर में अपने नियुक्ति स्थान पर हरजिंदर पाल मिह धामी को सूचना मिली कि कुपवाड़ा जिले के एक गांव में आतंकवादियों के कमांडरो की मंत्रणा हो रही है। अपने पाम थोंडे में ही सैनिक होने के बावजूद लेफ्टिनेंट धामी ने जाकर उस गांव को घेर लिया, और स्वयं 6 जवानों के साथ मंत्रणा स्थान पर धावा बोल दिया। उस मंत्रणा में आतंकवादी संगठन अल-बर्क, हिजबुल मुजाहिदीन और जमाल-उल-मुजाहिदीन के जिला कमांडर व चार अफगानी सम्मिलित थे। आतंकवादियों के संतरियों ने यूनिवर्सल मशीनगन और ए के राइफलों से जब उनके दल पर गोलियां चलानी शुरू कीं, तो व्यक्तिगत सुरक्षा की चिंता न करते हुए वह वीर अधिकारी अफगान आतंकवादी की ओर झपट पड़े, जो अधिकारी के अचानक हमले से स्तब्ध रह गया। लेफ्टिनेंट धामी ने उसे अपनी राइफल का निशाना बनाया और मार गिराया। उस वीर अधिकारी ने एक अन्य आतंकवादी को गोली चला कर घायल किया तो एक अन्य छिपे आतंकवादी ने यूनिवर्सल मशीनगन से अंधाधुंध गोलियां चलाइ जो उनके सीने को चीरती हुई आर-गार निकल गई। लेफ्टिनेंट धामी के साथी सैनिकों ने उनकी वीरता से प्रेरणा लेते हुए एक अन्य आतंकवादी को मार गिराया और बहुत से अस्त्र-शस्त्र बरामद किए।

गिरीश प्रधान, निदेशक

विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्रालय

(विधि कार्य विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 29 अक्टूबर 1993

सं० एफ० 11 (1)/88-वि०म० स्की० का० सं०—  
उच्चतम न्यायालय विधिक सहायता समिति का गठन तारीख  
9 जुलाई, 1981 के एक संकल्प द्वारा किया गया था।

2. और तारीख 22-11-1991 की अधिसूचना द्वारा  
उपर्युक्त संकल्प के अनुसरण में वर्तमान उच्चतम न्यायालय  
विधिक सहायता समिति 1-11-1991 से एक वर्ष की  
अवधि के लिए या विधिक सेवा प्राधिकरण अधिनियम, 1987  
के प्रवृत्त होने तक, इनमें से जो भी पूर्वतर हो, बनाई गई  
थी।

3. और उच्चतम न्यायालय विधिक सहायता स्कीम की  
अवधि तारीख 5-11-1992 की समसंख्यक अधिसूचना द्वारा  
1-11-1992 से एक वर्ष की अवधि तक जारी रही।

4. और उच्चतम न्यायालय विधिक सहायता स्कीम की  
अवधि 31-10-1993 को समाप्त होनी है।

अतः अब, राष्ट्रपति, तारीख 5-11-1992 की समसंख्यक अधि-  
सूचना के अनुक्रम में, वर्तमान उच्चतम न्यायालय विधिक सहायता  
समिति की अवधि को भारत के उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश,  
न्यायमूर्ति श्री पी० बी० साबन्त की अध्यक्षता में 1-11-1993 से  
एक वर्ष की और अवधि के लिए या विधिक सेवा प्राधिकरण  
अधिनियम, 1987 के उपबंधों के निबंधनों के अनुसार उच्चतम  
न्यायालय विधिक सहायता समिति गठित किए जाने तक, इनमें  
से जो भी पूर्वतर हो, बढ़ाते हैं।

डा० बी० के० अग्रवाल, अपर सचिव

कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेशन मंत्रालय

(कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक फरवरी 1994

(सहायक ग्रेड परीक्षा 1993 नियम)

शुद्धि-पत्र

शामकीय राजपत्र में 16 अक्टूबर, 1993 को प्रकाशित  
उपरोक्त परीक्षा की सूचना संख्या 6/21/93-के० से०-1 के  
हिन्दी रूपान्तरण के कुछ पैरे इस प्रकार से पढ़े जाएं :—

(i) पैरा 4 की चौथी पंक्ति में “1 जनवरी 1992” को  
“1 जनवरी 1993” पढ़ा जाए।

(ii) पैरा 4 के टिप्पणी भा की चौथी पंक्ति में “नियम  
5 (ग) (4)” को “नियम 5 (ग) (3)” पढ़ा  
जाए।

(iii) पैरा 5 की अन्तिम पंक्ति में उल्लिखित “अधिकतम  
45 वर्ष तक” को अधिकतम 3 वर्ष (अनुसूचित  
जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए आठ वर्ष)” पढ़ा  
जाए।

सी० भास्कर, अपर सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 9 अप्रैल 1994

नियम

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

(शिक्षा विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 28 फरवरी 1994

सं० मिसिल एफ० 10-4/93-यू० 5—भारतीय सामाजिक  
विज्ञान अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के नियमों और संघ ज्ञापन  
के नियम 3 और 6 के अंतर्गत भारत सरकार तत्काल से निम्न-  
लिखित सामाजिक वैज्ञानिक को उसके सामने दी गई अवधि  
तक परिषद के सदस्य के रूप में नामित करता है :—

प्रो० अमिया कुमार बागची, 31 मार्च, 1996  
निदेशक,  
समाज विज्ञान शिक्षण केन्द्र,  
10, लेक टेरस,  
कलकत्ता-700029

डी० एस० मुखोपाध्याय, संयुक्त सचिव

सं० 9/3/94-के० से०-II—कर्मचारी चयन आयोग द्वारा  
1994 में केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा, रेलवे बोर्ड  
सचिवालय लिपिक सेवा, पर्यटन विभाग (मुख्यालय स्थापना),  
केन्द्रीय सतर्कता आयोग तथा संसदीय कार्य मंत्रालय के उच्च  
श्रेणी ग्रेड की चयन सूचियों में सम्मिलित करने के लिए एक  
समिति विभागीय प्रतियोगितात्मक परीक्षा के लिए नियम सर्व-  
साधारण की सूचना के लिए प्रकाशित किए जाने हैं।

2. चयन सूची में शामिल करने के लिए चयन किए जाने  
वाले व्यक्तियों की संख्या आयोग द्वारा जारी की जाने वाली  
विज्ञप्ति में विशिष्टीकृत की जाएगी। अनुसूचित जाति और  
अनुसूचित जनजाति से संबंधित अभ्यर्थियों के लिए आरक्षण  
मांगकर्ता स्वर्ग/कार्यालयों द्वारा आयोग को भेजी गई रिक्ति  
को ध्यान में रखकर किया जाएगा।

अनुसूचित जाति/जनजाति का अभिप्राय उस किसी भी जाति से है जो निम्नलिखित में उल्लिखित है —

1. संविधान (अनुसूचित जाति) आदेश, 1950
2. संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश, 1950
3. संविधान (अनुसूचित जाति) (संघ राज्य क्षेत्र) आदेश, 1951
4. संविधान अनुसूचित जनजाति (संघ राज्य क्षेत्र) आदेश, 1951
5. संविधान (जम्मू और कश्मीर) अनुसूचित जाति आदेश, 1956
6. संविधान (अंडमान और निकोबार द्वीप समूह) अनुसूचित जनजाति आदेश, 1959
7. संविधान (बादरा तथा नागर हवेली) अनुसूचित जनजाति आदेश, 1962
8. संविधान (बादरा तथा नागर हवेली) अनुसूचित जाति आदेश, 1962
9. संविधान (पांडिचेरी) अनुसूचित जाति आदेश, 1964
10. संविधान (उत्तर प्रदेश) अनुसूचित जनजाति आदेश, 1967
11. संविधान (गोवा दमन और दीव) अनुसूचित जाति आदेश, 1968
12. संविधान (गोवा, दमन और दीव) अनुसूचित जनजाति आदेश, 1968
13. संविधान (नागालैंड) अनुसूचित जनजाति आदेश, 1970
14. संविधान (सिक्किम) अनुसूचित जनजाति आदेश, 1978
15. संविधान (सिक्किम) अनुसूचित जाति आदेश, 1978
16. संविधान (जम्मू और कश्मीर) अनुसूचित जनजाति आदेश, 1989 तथा समय-समय पर संशोधित आदेश

2क. शारीरिक रूप से विकलांग एवं बधिर उम्मीदवार के लिए आरक्षण किए जाएंगे।

नोट : वृष्टि विकलांगों के लिए आरक्षण करने का प्रश्न अभी विचाराधीन है।

3. कर्मचारी चयन आयोग द्वारा इस परीक्षा का कार्य संचालन इन नियमों के परिशिष्ट में विहित विधि से किया जाएगा।

किस तारीख को और किन-किन स्थानों पर परीक्षा ली जाएगी, इसका निर्धारण आयोग करेगा।

4. केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा अथवा रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा अथवा पर्यटन विभाग (मुख्यालय स्थापना) अथवा केन्द्रीय सतर्कता आयोग अथवा संसदीय कार्य मंत्रालय

के अवर श्रेणी ग्रेड का ऐसा कोई स्थायी अथवा नियमित रूप से नियुक्त अस्थायी प्राधिकारी जो 1 अगस्त, 1994 को निम्नलिखित शर्तें पूरी करता हो, इस परीक्षा में बैठ सकेगा —

- (1) 1 अगस्त, 1994 को केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा अथवा रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा के अवर श्रेणी ग्रेड से अथवा पर्यटन विभाग (मुख्यालय स्थापना) केन्द्रीय सतर्कता आयोग अथवा संसदीय कार्य मंत्रालय के अवर श्रेणी लिपिक के पद पर उनको पांच वर्षों से कम की अनुमोदित तथा लगातार सेवा नहीं होनी चाहिए।

परन्तु यदि केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा अथवा रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा अथवा पर्यटन विभाग (मुख्यालय स्थापना) अथवा केन्द्रीय सतर्कता आयोग अथवा संसदीय कार्य मंत्रालय के अवर श्रेणी ग्रेड में उसकी नियुक्ति प्रतियोगितात्मक परीक्षा जिम्मे सीमित विभागीय प्रतियोगितात्मक परीक्षा के परिणाम निर्णायक तारीख से कम से कम पांच वर्ष पहले घोषित हुए होने चाहिए तथा उसकी उस ग्रेड में कम से कम चार वर्ष की अनुमोदित और लगातार सेवा होनी चाहिए।

टिप्पणी : (1) स्वीकृत तथा लगातार सेवा ही 5 वर्ष की सीमा उस अवस्था में भी लागू होगी यदि किसी उम्मीदवार की कुल विचारणीय सेवा अंशतः केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा अथवा रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा पर्यटन विभाग (मुख्यालय स्थापना) अथवा केन्द्रीय सतर्कता आयोग अथवा संसदीय कार्य मंत्रालय में अवर श्रेणी लिपिक के रूप में और अंशतः उच्च श्रेणी लिपिक के रूप में की गई हो।

टिप्पणी : (2) केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा अथवा रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा अथवा पर्यटन विभाग (मुख्यालय स्थापना) अथवा केन्द्रीय सतर्कता आयोग अथवा संसदीय कार्य मंत्रालय का कोई स्थायी अथवा नियमित रूप से नियुक्त अस्थायी अवर श्रेणी लिपिक, जिसने 26 अक्टूबर, 1962 को जारी की गई आपातकाल की उद्घोषणा के प्रवर्तन काल में अर्थात् 26 अक्टूबर, 1962 से 9 जनवरी, 1968 तक सशस्त्र सेना में सेवा की हो, सशस्त्र सेना से प्रत्यावर्तन पर सशस्त्र सेना में अपनी सेवा की अवधि (प्रशिक्षण की अवधि मिलाकर, यदि कोई हो) निर्धारित न्यूनतम सेवा में गिन सकेगा; अथवा

टिप्पणी : (3) ऐसे अवर श्रेणी लिपिक जो सशस्त्र प्राधिकारी की अनुमति से निम्नवर्गीय पदों पर प्रतिनिधित्व पर हो उन्हें, अथवा पात्र होने पर इस परीक्षा में भाग लेने का पात्र समझा जाएगा। तथा यह बात उन अवर श्रेणी लिपिकों पर लागू नहीं होती जो स्थानांतरित रूप में निम्नवर्गीय पदों पर या अन्य सेवा में नियुक्त किए गए हों, और केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा अथवा रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा अथवा पर्यटन विभाग



(मुख्यालय स्थापना) अथवा केन्द्रीय सतर्कता आयोग अथवा संसदीय कार्य मंत्रालय के निम्न श्रेणी ग्रेड में ग्रहण अधिकार (लियन) न रखते हों।

(2) आयु :—

(क) 1-8-1994 को उसकी आयु 50 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए अर्थात् उसका जन्म 2 अगस्त, 1944 से पूर्व नहीं हुआ हो।

(ख) ऊपरलिखित ऊपरी आयु सीमा में निम्नलिखित और छूट होगी :

(1) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का हो तो अधिक से अधिक 5 वर्ष तक,

(2) किसी दूसरे देश से संघर्ष के दौरान अथवा उपद्रवग्रस्त इलाकों में फौजी कार्यवाहियों को करते समय अशक्त हुए तथा उसके परिणाम-स्वरूप नौकरी से निर्मुक्त रक्षा सेवा कामियों के मामले में अधिकतम 3 वर्ष तक (अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए 8 वर्ष)।

(3) 1971 में हुए भारत-पाक संघर्ष के दौरान फौजी कार्यवाहियों में विकलांग हुए तथा उसके फलस्वरूप निर्मुक्त किए गए सीमा सुरक्षा बल के कामियों के मामलों में अधिकतम 3 वर्ष तक (अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए 8 वर्ष)।

(3) टंकण परीक्षा—यदि किसी उम्मीदवार को अवर श्रेणी ग्रेड में स्थाईकरण के उद्देश्य से संघ लोक सेवा आयोग/सचिवालय प्रशिक्षणशाला / सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबन्ध संस्थान (परीक्षा स्कन्ध) अधीनस्थ सेवा कर्मचारी चयन आयोग और हिन्दी शिक्षण योजना के अंतर्गत राजभाषा विभाग की मासिक/तिमाही टाईप की परीक्षा उत्तीर्ण करने से छूट न मिली हो तो इस परीक्षा की अधिसूचना की तारीख को या इससे पहले वह टाईप की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेनी चाहिए।

5. परीक्षा में बैठने के लिए उम्मीदवार की पात्रता या अपात्रता के बारे में इस आयोग का निर्णय अंतिम होगा।

6. किसी उम्मीदवार को परीक्षा में तब तक नहीं बैठने दिया जाएगा जब तक कि उसके पास आयोग का प्रवेश पत्र (सर्टिफिकेट आफ एडमिशन) न हो।

7. यदि किसी उम्मीदवार को आयोग द्वारा निम्नलिखित बातों के लिए दोषी घोषित कर दिया जाता है या कर दिया गया हो कि उसने :—

(1) किसी भी प्रकार से अपनी उम्मीदवारी के लिए समर्थन प्राप्त किया है, अथवा

(2) नाम बदल कर परीक्षा दी है, अथवा

(3) किसी अन्य व्यक्ति से छद्म रूप से कार्य कराया है, अथवा

(4) जाली प्रमाण पत्र या ऐसे प्रमाण पत्र प्रस्तुत किए हैं, जिसमें तथ्यों को बिगाड़ा गया हो, अथवा

(5) गलत या झूठे वक्तव्य दिए हैं, या किसी महत्वपूर्ण तथ्य को छिपाया है, अथवा

(6) परीक्षा में प्रवेश पाने के लिए किसी अन्य अनियमित अथवा अनुचित उपायों का सहारा लिया है, अथवा

(7) परीक्षा भवन में अनुचित तरीके अपनाए हैं, अथवा

(8) परीक्षा भवन में अनुचित आचरण किया है, अथवा

(9) असंगत सामग्री लिखना जिसमें पाण्डुलिपि में अश्लील भाषा या अश्लील सामग्री भी शामिल है, या

(10) परीक्षा संचालन के दौरान परीक्षा भवन से प्रश्न पुस्तिका/उत्तर पत्रक ले गया हो, या इसे किसी अनाधिकृत व्यक्ति को दिया हो।

(11) आयोग द्वारा परीक्षा के संचालन के लिए नियुक्त स्टाफ को तंग किया है अथवा शारीरिक चोट पहुंचाई है, अथवा

(12) अपने प्रवेश पत्र के साथ जारी किए गए किसी अनुदेश का उल्लंघन किया है, अथवा

उपर्युक्त खंडों में उल्लिखित सभी अथवा किसी कार्य द्वारा,

(3) आयोग को अवप्रेरित करने का प्रयत्न किया है, तो उस पर आपराधिक अभियोग (क्रिमिनल प्रोसीक्यूशन) चलाया जा सकता है और उसके साथ ही उसे :—

(क) आयोग द्वारा इस परीक्षा, जिसका वह उम्मीदवार है के लिए अयोग्य ठहराया जा सकता है, अथवा

(ख) उसे अस्थायी रूप से अथवा एक विशेष अवधि के लिए :—

(1) आयोग द्वारा ली जाने वाली किसी भी परीक्षा अथवा चयन के लिए,

(2) केन्द्रीय सरकार द्वारा उसे उसके अधीन किसी भी नौकरी से वारित किया जा सकता है, और

(3) उसके विरुद्ध उपर्युक्त नियमों के अधीन अनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है।

8. यदि कोई उम्मीदवार किसी प्रकार से अपनी उम्मीदवारी के लिए समर्थन प्राप्त करने में कोई कोशिश करेगा या आयोग द्वारा उसका आचरण ऐसा समझा जाएगा जिसमें उसे परीक्षा में बैठने के लिए अयोग्य करार दिया जाएगा।

9. आयोग परीक्षा के बाद हरेक उम्मीदवार को अंतिम रूप से दिए गए कुल अंकों के आधार पर उनकी योग्यता के क्रम में उनके नामों की पांच अलग-अलग सूचियां तैयार करेगा और उसी क्रम में उतने ही उम्मीदवारों के नाम अपेक्षित संख्या तक उच्च श्रेणी ग्रेड की प्रवर सूची में शामिल करने की सिफारिश करेगा जो आयोग के निर्णय अनुसार परीक्षा द्वारा योग्य माने गए हों।

परन्तु यदि किसी अनुसूचित जाति और अनुसूचित आदिम जाति के उम्मीदवार सामान्य स्तर के आधार पर अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के लिए आरक्षित रिक्त स्थानों तक नहीं भरे जा सकते। आरक्षित कोटा में कमी का पूरा करने के लिए स्तर में छूट देकर परीक्षा में योग्यता क्रम में उनके रैंक का ध्यान किए बिना यदि योग्य हुए तो आयोग द्वारा सिफारिश की जा सकेगी।

टिप्पणी : उम्मीदवारों को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि यह प्रतियोगिता परीक्षा है न कि अर्हक परीक्षा (क्वालिफाइंग एक्जामिनेशन) इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर उच्च श्रेणी ग्रेड की प्रवर सूची में कितने उम्मीदवार के नाम शामिल किए जाएं, उनका निर्णय करने के लिए सरकार पूरी तरह मक्षम है। इसलिए कोई भी उम्मीदवार अधिकार के तौर पर इस बात पर कोई दावा नहीं कर सकेगा कि उसके द्वारा परीक्षा में दिए गए उत्तर के आधार पर उसका नाम प्रवर सूची में शामिल किया जाए।

10. हर उम्मीदवार को परीक्षाफल की सूचना किस रूप में तथा किस प्रकार दी जाए इसका निर्णय आयोग अपने विवेकानुसार करेगा और आयोग परिणामों के बारे में कोई पत्र व्यवहार नहीं करेगा।

11. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाने से चयन का अधिकार तब तक नहीं मिलना जब तक कि संवर्ग प्राधिकारी आवश्यक जांच के बाद संतुष्ट न हो जाए कि सेवा में उसके आचरण को देखते हुए उम्मीदवार हर प्रकार के चयन के लिए उपयुक्त है।

किन्तु इस संयंत्र में निर्णय कि क्या आयोग द्वारा चयन के लिए सिफारिश किया गया कोई विशेष उम्मीदवार उपयुक्त नहीं है, कार्मिक तथा प्रशिक्षण विभाग के परामर्श से किया जाएगा।

12. जो उम्मीदवार परीक्षा में बैठने के लिए आवेदन पत्र देने के बाद या परीक्षा में बैठ जाने के बाद केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा/रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक/सेवा पर्यटन विभाग/केन्द्रीय सतर्कता आयोग/संसदीय कार्य मंत्रालय के अपने पद से त्याग पत्र दे देगा अथवा अन्य किसी प्रकार से उस सेवा को छोड़ देगा या उससे अपना संबंध विच्छेद कर लेगा या जिसकी सेवा उसके विभाग द्वारा समाप्त कर दी हो या किसी निःसंवर्गीय पद या दूसरी सेवा में स्थानान्तरण द्वारा नियुक्त किया जा चुका

है और के० म० लि० सेवा/रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा/पर्यटन विभाग/केन्द्रीय सतर्कता आयोग/संसदीय कार्य मंत्रालय के निम्न श्रेणी ग्रेड में ग्रहण अधिकार न रखता हो वह इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर नियुक्ति का पात्र नहीं होगा।

नव्यापि यह उस अवर श्रेणी लिपिक पर लागू नहीं होता जो मक्षम अधिकारी के अनुमोदन से किसी भी निःसंवर्गीय पद पर प्रतिनियुक्त किया जा चुका है।

करतार सिंह,  
अवर सचिव

#### परिशिष्ट

परीक्षा निम्नलिखित योजना के अनुसार होगी।

भाग 1. नीचे परिच्छेद में बताए गए विषयों की कुल 300 अंकों की लिखित परीक्षा होगी।

भाग 2. आयोग द्वारा विवेकानुसार ऐसे उम्मीदवारों के सेवा बृत्तों (रिकार्ड ऑफ सर्विस) का मूल्यांकन जो लिखित परीक्षा में ऐसा न्यूनतम स्तर प्राप्त करते हैं, जिसके बारे में आयोग फैसला करेगा और उसके लिए अधिकतम अंक 100 होंगे।

2. भाग 1 में बताई गई लिपिक परीक्षा के विषय प्रत्येक प्रश्न पत्र के लिए अधिकतम अंक तथा दिया जाने वाला समय इस प्रकार होगा —

विषय	अधिकतम अंक	समय
प्रश्नपत्र 1. (वस्तुनिष्ठ प्रकार)		
(क) सामान्य ज्ञान 100 प्रश्न	200 अंक	2 घंटे
(ख) अंग्रेजी भाषा का परिज्ञान तथा लेखन योग्यता 100 प्रश्न		
प्रश्नपत्र 2. टिप्पण आलेखन तथा कार्यालय पद्धति	100 अंक	2 घंटे

प्रश्न पत्र 1. वस्तुनिष्ठ बहुविकल्प प्रकार का होगा जबकि प्रश्न पत्र 2 वर्णमय प्रकार का होगा।

टिप्पणी :—निम्नलिखित दोनों श्रेणियों के उम्मीदवारों के लिए टिप्पण प्रारूप लेखन तथा कार्यालय पद्धति के प्रश्न पत्र अलग-अलग होंगे।

- (1) केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा; पर्यटन विभाग, केन्द्रीय सतर्कता आयोग तथा संसदीय कार्य मंत्रालय।
- (2) रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा।

3. परीक्षा का पाठ्य विवरण नीचे दी गई अनुसूची के अनुसार होगा।

टिप्पणी 1 :—उम्मीदवारों को प्रश्न पत्र 2 टिप्पण आलेखन तथा कार्यालय पद्धति के उत्तर हिन्दी या अंग्रेजी में देने का विकल्प दिया जाता है।

टिप्पणी 2 : यह विकल्प पूरे प्रश्न पत्र के लिए होगा न कि एक ही प्रश्न पत्र में अलग-अलग प्रश्नों के लिए।

टिप्पणी 3 : जो उम्मीदवार उपरोक्त प्रश्न पत्र के उत्तर अंग्रेजी में अथवा हिन्दी (देवनागरी) में लिखना चाहता है उन्हें यह बात आवेदन पत्र कालम 6 में स्पष्ट रूप से लिख देनी चाहिए अन्यथा यह समझा जाएगा कि वे प्रश्न पत्र के उत्तर अंग्रेजी में लिखेंगे।

टिप्पणी 4 : एक बार रखा गया विकल्प अंतिम माना जाएगा और आवेदन पत्र के कालम 6 में परिवर्तन करने से संबंधित कोई अनुरोध साधारणतया स्वीकार नहीं किया जाएगा।

टिप्पणी 5 : प्रश्न पत्र 1(क) तथा प्रश्न पत्र 2 हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में दिए जाएंगे।

टिप्पणी 6 : उम्मीदवारों द्वारा अपनाई गई (ग्राफ्ट की गई) भाषा को छोड़कर अन्य किसी भाषा में लिखे प्रश्न पत्र 2 के उत्तर को कोई महत्व नहीं दिया जाएगा।

टिप्पणी 7(1) : दृष्टि विकलांग श्रेणी के अभ्यर्थियों के लिए दोनों ही प्रश्नपत्र ब्रेल लिपि में होंगे। प्रश्नपत्र 1(वस्तुनिष्ठ प्रकार) में उन्हें अपना उत्तर ब्रेल प्रश्न पुस्तिका में ही दर्शाना होगा, जबकि प्रश्नपत्र 2 में उन्हें प्रश्नों का उत्तर ब्रेल लिपि में देना होगा।

टिप्पणी 7 (2) : ऐसे अभ्यर्थियों को ब्रेल में उत्तर लिखने के लिए अपने उपस्कर स्वयं लाने होंगे।

टिप्पणी 7 (3) : दृष्टि विकलांग अभ्यर्थियों को प्रश्नपत्र 1 में आधा घंटा तथा प्रश्नपत्र 2 में एक घंटा अनिवार्य समय दिया जाएगा।

4. उम्मीदवारों को सभी उत्तर अपने हाथ से लिखने होंगे। किसी भी हालत में उन्हें उत्तर लिखने के लिए अन्य व्यक्ति की सहायता लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

5. आयोग अपने विवेक से परीक्षा के किसी एक या सभी विषयों के अर्हक अंक (क्वालिफाइंग नंबर) निर्धारित कर सकता है।

6. केवल कौरे सतही ज्ञान के लिए अंक नहीं दिए जाएंगे।

7. खराब लिखावट के कारण लिखित विषयों के अधिकतम अंकों के 5 प्रतिशत तक अंक काट दिए जाएंगे।

8. परीक्षा के सभी विषयों में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाएगा कि भावाभिव्यक्ति कम से कम शब्दों में क्रमबद्ध तथा प्रभावपूर्ण ढंग से ठीक ठाक की गई है।

### अनुसूची

#### परीक्षा का पाठ्यक्रम विवरण

प्रश्न पत्र : 1(क) सामान्य जानकारी : प्रश्न उम्मीदवारों के आस-पास के पर्यावरण के प्रति उसकी सामान्य जानकारी तथा समाज के प्रति उनके अनुप्रयोग के संबंध में उम्मीदवार की योग्यता की जांच करने के लिए पूछे जाएंगे। सामायिक घटनाओं और दिन प्रतिदिन पर्यवेक्षण के ऐसे मामलों और उनके वैज्ञानिक पहलुओं के संबंध में भी ज्ञान की जांच करने के लिए प्रश्न पूछे जाएंगे जिनकी जानकारी की अपेक्षा एक शिक्षित व्यक्ति से की जाती है। इस परीक्षा में भारत और उसके पड़ोसी देशों में संबंध में विशेषकर इतिहास संस्कृति, भूगोल, आर्थिक दृश्य, सामान्य राज्य, व्यवस्था तथा वैज्ञानिक अनुसंधान से संबंधित प्रश्न भी पूछे जाएंगे।

(ख) अंग्रेजी भाषा का परिज्ञान तथा लेखन योग्यता : इस परीक्षा में अंग्रेजी भाषा, शब्दावली, वर्तनी, व्याकरण, वाक्य संरचना, समानार्थक शब्द, विपरीतार्थक शब्द, वाक्य पूरा करना, वाक्यांश तथा शब्दों के मुहावरेदार प्रयोग इत्यादि के संबंध में उम्मीदवार के विवेक तथा ज्ञान को आंकने के लिए प्रश्न पत्र तैयार किए जाएंगे इसमें अनुच्छेद परिज्ञान पर भी प्रश्न होंगे।

प्रश्न पत्र : 11—टिप्पणी व आलेख तथा कार्यालय पद्धति : इस प्रश्न पत्र का प्रयोजन सचिवालय तथा संबंध कार्यालयों में कार्यालय पद्धति के बारे में उम्मीदवारों का ज्ञान और सामान्यतः टिप्पण व आलेखन के लिखने तथा समझने से उम्मीदवारों की योग्यता जाचना है।

केन्द्रीय सचिवालय लिपिक सेवा पयटन विभाग केन्द्रीय सतर्कता आयोग तथा संसदीय कार्य मंत्रालय के उम्मीदवारों को चाहिए कि इसके लिए कार्यालय पद्धति की नियम पुस्तक (मैन्युअल ऑफ ऑफिस प्रोसीजर) :—सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबन्ध संस्थान द्वारा जारी की गई कार्यालय पद्धति पर टिप्पणियां रूल्स ऑफ प्रोसीजर एण्ड कण्डक्ट ऑफ बिजनेस इन लोक सभा एण्ड राज्य सभा तथा संघ के शासकीय प्रयोजन के लिए प्रयोग से संबंधित गृह मंत्रालय द्वारा जारी की गई आदेश पुस्तिका पढ़ें।

रेलवे बोर्ड सचिवालय लिपिक सेवा के उम्मीदवारों को चाहिए कि वे रेलवे बोर्ड द्वारा जारी की गई कार्यालय पद्धति संहिता और लोक सभा और राज्य सभा में प्रक्रिया तथा कार्य संचालन के नियमों और संघ शासकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग से संबंधित गृह मंत्रालय द्वारा जारी किए गए आदेशों की हस्त पुस्तिका और इस प्रयोजन के लिए राजभाषा के प्रयोग से संबंधित भारतीय रेलवे के आदेशों के संकल्पन का अध्ययन करें।

## PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th January 1994

No. 24-Pres/94.—The President is pleased to approve the award of "Kirti Chakra" to the undermentioned persons for acts of conspicuous gallantry :—

Shri Ugrasen Sahoo, (Posthumous)  
Dhenkanal, Orissa.

(Effective date of the award : 31st July 1991)

On the night of 31st July, 1991, two robbers armed with Bhujalis (sharp edged weapons), and knives entered the house of Shri Binod Kumar Sahoo, resident of village Ganjodi, District Dhenkanal, and stole gold ornaments, a radio, and cash amounting to Rs. 1500. The inmates raised an alarm, on hearing which about 150 persons of the neighbourhood gathered and surrounded the house of Shri Sahoo, but none dared enter, in the face of the criminals threat to hurl bombs at them.

In the course of their retreat, the robbers assaulted a number of villagers. On seeing this, Shri Ugrasen Sahoo, Assistant Teacher, and a resident of the village, exhibiting exemplary courage single handedly, made a daring and valiant effort to overpower the robbers. Unfortunately, while doing so he was repeatedly stabbed on his abdomen and back by one of the robbers. Shri Sahoo succumbed to the injuries on his way to the Kamakhya City Hospital.

This brave effort by Shri Ugrasen Sahoo helped in the identification, and subsequent apprehension of the robbers. Shri Ugrasen Sahoo sacrificed his life in a valiant effort to apprehend the criminals.

2. 4456979 Sepoy Satnam Singh, (Posthumous)  
7 Sikh Light Infantry.

(Effective date of the award : 13 March, 1992)

At 6.50, on the morning of the 13th March 1992 during cordon and search operations launched in area of Kakrali, Punjab, Sepoy Satnam Singh and his comrades encountered a group of six terrorists firing from AK-47 rifles, near a tubewell. The combing party immediately engaged them, and returned the fire. The terrorists then attempted to escape towards nearby sugar cane field. On seeing this, unmindful of his personal safety, Sepoy Satnam Singh chased the fleeing terrorists. In the ensuing fire one of the terrorists was killed on the spot. In this encounter he was injured by the terrorist's fire. Though bleeding profusely, Sepoy Satnam Singh continued the chase when he came face to face with the terrorist's leader, self styled Lieutenant General Jarnail Singh of Khalistan Liberation Force, whom he shot dead. This gallant soldier then lobbed a grenade which injured some of the escaping terrorists. However, at that very moment he received another burst of fire on his head, which killed him instantly. In this operation Sepoy Satnam Singh and his comrades inflicted five casualties on the terrorists.

In the performance of his duty, Sepoy Satnam Singh displayed exemplary gallantry and made the supreme sacrifice of his life.

3. 2988308 Sepoy Ram Swaroop Gujar, (Posthumous)  
27 Rajput Regiment.

(Effective date of the award : 23rd September, 1992)

At about one-thirty in the afternoon of the 23rd September, 1992 during the cordon and search operation of a village in District Baramulla, Jammu and Kashmir Sepoy Ram Swaroop Gujar, alongwith his other comrades, gave chase to a fleeing terrorist, who had broken the cordon, and surrounded him in a paddy field. Suddenly the terrorist pulled out a grenade. Seeing this, Sepoy Ram Swaroop Gujar, showing great presence of mind, swiftly sprung upon the terrorist, preventing him from being able to lob the grenade. Unfortunately the grenade exploded, killing Sepoy Ram Swaroop Gujar on the spot.

Sepoy Ram Swaroop Gujar, thus displayed conspicuous gallantry courage and devotion to duty in saving the lives of his comrades at the cost of his own.

4. 3383731 Lance Naik Jagjit Singh. (Posthumous)  
2 Sikh Regiment.

(Effective date of the award : 3rd October, 1992)

On the afternoon of the 3rd October, 1992, at about 3 PM, Lance Naik Jagjit Singh, was on a seek and apprehend patrol against terrorists in the general area of a village in Budgam Sector in Jammu and Kashmir, when he noticed that three anti-national elements were running towards the nearby paddy fields. Unmindful of his personal safety, he sprang from his moving vehicle and ran in hot pursuit. He apprehended one of them who was later identified as Gulzar Ahmed Malik, alias Gul Pahalwan, a hardcore Pakistan trained terrorist, and the chief of the 'Al-Mujahideen' group.

Later the same evening, at about 5.30 PM, on the basis of information and identification by the apprehended militant, Lance Naik Jagjit Singh chased another dreaded terrorist. Seeing this, the criminal started firing indiscriminately and hid himself in a thick field of maize. In the ensuing encounter both Lance Naik Jagjit Singh as well as the terrorist were wounded. Although fatally wounded, Lance Naik Jagjit Singh continued firing. The terrorist was eventually killed by the other members of the patrol in the continuing the fire. A loaded AK-56 assault rifle, with ammunition as also grenade, were recovered from his body.

In this display of indomitable courage and dedication to duty Lance Naik Jagjit Singh, made the supreme sacrifice.

5. JC-NYA-13734792 Naib Subedar Baldev Raj,  
17 Jammu and Kashmir Rifles. (Posthumous)

(Effective date of the award : 3rd November, 1992)

On the 3rd November, 1992 at about seven in the morning on receiving information of an encounter with terrorists, Naib Subedar Baldev Raj of 17 Jammu and Kashmir Rifles, deployed in Naugam Sector in Jammu and Kashmir, was ordered to take a reinforcement party to the site of the encounter. There was only one possible approach route to the site, on which an earlier group had suffered two casualties, these of a Junior Commissioned Officer who was killed and a Non-Commissioned Officer who was severely wounded. Despite the tremendous odds, Naib Subedar Baldev Raj, unmindful of his personal safety, decided to adopt this treacherous path, alongwith two Other Ranks, and managed to close in on the terrorists. In the ensuing encounter he shot dead a terrorist before himself succumbing to a shot fired at him from point blank range by the terrorist. Even while breathing his last this brave Junior Commissioned Officer managed to continue firing at the terrorists, injuring one of them gravely.

Naib Subedar Baldev Raj fought with unparalleled courage, and undaunted by extreme danger to his own life.

6. 2481169 Sepoy Gurtej Singh Gill, (Posthumous)  
15 Punjab Regiment.

(Effective date of the award : 31st January, 1993)

On the 31st January, 1993, during cordon and search operations conducted in Duligund village of Jammu and Kashmir, Sepoy Gurtej Singh Gill and his fellow Jawans came under the fire of terrorists hiding in the village. Unmindful of his personal safety, this young soldier ran into the village and apprehended a terrorist after a scuffle.

On the basis of the information given by the apprehended terrorist, the troops started moving towards their hideout when the terrorist resumed intense firing. Displaying exemplary courage Sepoy Gurtej Singh Gill entered the hideout and neutralised their fire by lobbing grenades.

Later in the same operation, he volunteered to apprehend another notorious terrorist, and started crawling towards him. The cornered criminal, realising that his escape route was about to be cut off, opened fire and injured the young Sepoy on his leg, and started to flee. Despite the injury, Sepoy Gurtej Singh Gill continued the pursuit of the terrorist, and felled him. In the process this young and fearless soldier was once again hit by militant fire, which resulted in his own death.

Displaying conspicuous bravery indomitable spirit and exemplary devotion to duty, Sepoy Gurtej Singh Gill made the supreme sacrifice.

7. 2874977 Naik Nawab Singh Tomar, (Posthumous)  
Rajputana Rifles.

(Effective date of the award : 9th April, 1993)

On the 9th April, 1993, on receiving definite information on a terrorists hideout in village Pohar of Budgam region in Jammu and Kashmir, a search and cordon operation was under taken by the personnel of 11 Rajputana Rifles. The village was approached from four different directions by rifle companies, and the commando platoon of the Battalion. At about two in the afternoon the commando platoon came under intense fire from the terrorists, which was immediately retaliated by Naik Nawab Singh Tomar, a team leader in the platoon. On observing that a group of terrorists were attempting to break out of the cordon, he ordered his team to take another position to prevent the break out. Unmindful of his personal safety, and under heavy fire, Naik Nawab Singh Tomar shot dead a terrorist. In the process, however, he was hit by a bullet fired by the terrorist on his right arm. The terrorists who were desperate to escape fired indiscriminately and started running. Once again the brave soldier chased the terrorists and despite being hit by a volley of bullets in the abdomen, he charged and fired at the terrorists killing two of them on the spot.

Naik Nawab Singh Tomar, thus fought with indomitable courage and dedication, and unflinchingly made the supreme sacrifice.

8. 2589308 Naik V Kannalan Kennady, (Posthumous)  
25 Madras Regiment.

(Effective date of the award : 10th April, 1993)

On 10th April, 1993, a patrol of the 25 Madras Battalion which was deployed in Jammu and Kashmir along the Line of Control in a High Altitude Area discovered a trail left by anti-national elements, leading from the Line of Control towards the Kashmir Valley. In order to intercept and block them, Naik V Kannalan Kennady, along with two Other Ranks, rushed to the top of Shamsabari Range with his Light Machine Gun. On reaching the top he found two anti-national elements running towards him. He opened fire, killing one of them on the spot. The other turned back and ran out of sight. Naik V Kannalan Kennady then gave chase but while doing so was engaged by the remaining terrorists who had taken position further back along the ridge. Naik V Kannalan Kennady was wounded on the leg, and fell down. Despite his severe wound, Naik Kennady continued to return fire. When he ran out of ammunition, he picked up the AK-56 rifle of one of the terrorists and kept on firing until his fellow soldiers surrounded the terrorists. In the ensuing encounter seven more terrorists were killed and a large quantity of arms and ammunition was recovered.

During this encounter, continuing to fight with indomitable courage and grit, Naik V Kannalan Kennady, was again injured, this time fatally.

9. JC-169280 Subedar Rewel Singh,  
4 Jammu and Kashmir Rifles.

(Effective date of the award : 3rd May, 1993)

On the 3rd May, 1993, at about 0900 hours, on the Trach Chas—Stung Trung road as a part of United Nations Transitional Authority in Cambodia, the leading vehicle of the patrol in which Subedar Rewel Singh was seated was subjected

to a heavy volume of automatic fire. A rocket launched by the National Army of Democratic Kampuchea (NADK) guerrillas hit the fuel tank of the vehicle and the tank exploded. Subedar Rewel Singh received grievous bullet injuries on both his hands, while the driver, who was also hit slumped over the steering wheel.

Subedar Rewel Singh unmindful of the serious injuries to his hands, ordered his men to return the fire, and in a remarkable display of courage, inspite of the hail of bullets and leaping flames he dragged the driver out of the burning vehicle. The action of immediate retaliatory fire from the vehicle, which had received a direct rocket hit and was being subjected to heavy automatic fire, took the National Army of Democratic Kampuchea (NADK) guerrillas by surprise. Meanwhile the rest of the patrol had also opened fire with Light Machine Guns and 2" Mortars. Two NADK guerrillas were injured in this action while the rest of the NADK guerrillas, surprised by the ferocity of the quick counter-ambush, fled the scene in a year of operations by the United Nations transitional Authority in Cambodia, this was the first instance when a NADK ambush was successfully broken. The credit for this goes to Subedar Rewel Singh, who displayed conspicuous gallantry, exceptional courage and outstanding leadership.

G. B. PRADHAN,  
Director

New Delhi, the 26th January 1994

No. 25-Pres. 84.—The President is pleased to approve the award of "SHAURYA CHAKRA" to the undermentioned persons for acts of gallantry :—

Wing Commander Rajendra Krishna Khanna (Retired).  
Jaipur, Rajasthan.

(Effective date of the award 19th January, 1988).

On the 19th January, 1988, Wing Commander Khanna Flying Instructor, flew from the Jaipur Airport in a Cessna Air Craft, along with a trainee pilot. While cruising at an altitude of 800 ft. in order to prevent a hit by a vulture, Wing Commander Khanna took over the controls from the trainee pilot. The Cessna dropped sharply. When the bird was out of the way, Wing Commander Khanna took the Cessna back upto 800 ft. However, in the process the battery of the aircraft, fell on the elevator and trimmer cables, causing a short circuit. The cockpit filled with fumes and the smell of burning wires. Despite this, exhibiting rare skill and presence of mind, Wing Commander Khanna kept the aircraft under control and brought it down safely.

Wing Commander Rajendra Krishna Khanna (Retired), thus saved the aircraft, and the lives of the trainee Pilot as well as his own, by his presence of mind, and flying skills.

2. Doctor Rajendra Prasad Mohanty, Bhubaneswar, Orissa, (Posthumous)

(Effective date of the award : 1st August, 1989)

At around 8.30 on the evening at the 1st August, 1989, on hearing the wails of a lady, Dr. Rajendra Prasad Mohanty, rushed out of his house to find some miscreants attacking Shri M. M. Rath, and his wife, Shrimati Rashmi Rath. One of the miscreants was trying to molest Shrimati Rath, besides trying to rob her at her gold necklace, while the other was attacking Shri Rath with a knife. In utter disregard of his personal safety, Dr. Mohanty tried to overpower the miscreants, but they staved him fatally in the abdomen.

Dr. Rajendra Prasad Mohanty, thus, sacrificed his own life in his effort to save the life of the couple and the modesty of a married woman.

3. Shri Mohan Singh,  
Gurdaspur, Punjab.

(Effective date of the award : 23rd January, 1990)

While a recital of Shri Guru Granth Sahib was in progress in the house of Shri Mohan Singh, at Wadai Village of Gurdaspur District, at about 7.00 PM of the 23rd January, 1990, four terrorists armed with AK-47 assault rifles entered the premises and demanded to be given his licenced shot gun. They also threatened to kill his entire family if he failed to hand over the gun. Undaunted, Shri Mohan Singh refused to hand over his gun, and confronted them spiritedly. This led to an exchange of fire between him and terrorists lasting about fifteen minutes. One of the terrorists bullets damaged a barrel of Shri Mohan Singh's double barrelled gun, but he continued firing at them with the other barrel, and succeeded in injuring to one of them. In the cross fire, his young son Hardip Singh, was killed. He still refused to lose heart and fought on bravely till the terrorists fled.

Shri Mohan Singh, thus, showed great courage and presence of mind in fighting the terrorists, and succeeded in saving the lives of the many guests and family members present.

4. Shri Kasinath Mohapatra, (Posthumous)  
Cuttack, Orissa

(Effective date of the award : 19th January, 1991)

On the night of 18th/19th January, 1991, at about one in the morning, a gang of about eight to ten dacoits committed dacoity in a house in Gundilo Village of Cuttack District. They also detonated some bombs. Shri Kasinath Mohapatra, and other villagers reached the site, challenged the dacoits and grappled with them. In the encounter, thirty-eight year old Shri Mohapatra exhibited extraordinary daring and acted at the risk of his own life. Unfortunately, one of the dacoits brutally assaulted him as a result of which he received injuries on his head. He was admitted to a hospital in Cuttack where he expired.

Shri Kasinath Mohapatra, thus, displayed exemplary valour and daring in challenging the dacoits.

5. Lieutenant Commander Satyendra Sharma,  
NM, (01664-F).

(Effective date of the award : 15th November, 1991)

Lt. Commander Satyendra Sharma was the officer in-Charge of the Boarding Party for fire fighting operations off Bombay High on 14th November, 1991 on the Vessel MV Zakir Hussain. Despite continuous pumping of water by two Off-shore Supply Vessels in the vicinity, the fire could not be brought under control. Lt. Commander Satyendra Sharma led the damage control party on board and assessed that the ship constituted a danger to the submerged gas pipe line and needed to be shifted from its location. However, further action could not be pursued the same day because of fading light, and the absence of any power on board.

On the 15th November 1991, the Naval Boarding Party led by the officer again boarded the still burning vessel, and assisted in anchoring the ship, well clear of the submerged gas pipe line. Thereafter the officer led his party in carrying out systematic fire fighting operations, and succeeded in bringing it under control. The officer also organised and led a search of the ship to locate personnel who may have been trapped inside the burning vessel, and recovered the bodies of crew members.

Lt. Commander Satyendra Sharma, NM, thus, displayed exemplary courage, determination, and devotion to duty throughout the fire fighting operations.

6. 6371911 Lance Naik Badri Lal,  
Army Service Corps.

(Effective date of the award : 15th June, 1992)

Lance Naik Badri Lal while returning from leave was occupying a seat next to the door of a bogie of the Dadar—

Guwahati Express. At about a quarter to one in the morning of 15th June, 1992, the train halted abruptly, and a gang of robbers, brandishing pistols, swords and khukaries, demanded that Lance Naik Badri Lal open the door. Realising the impending danger, Lance Naik Badri Lal raised an alarm, alerting the other occupants of the bogie. Thereafter he grappled with one of the robbers and caught hold of his pistol. Unfortunately, Lance Naik Badri Lal was shot in the abdomen by another robber at point blank range. Disheartened by the courageous resistance put up by Lance Naik Badri Lal, the robbers realised the futility of trying to get the bogie door open, and left. Lance Naik Badri Lal, conscious of the possibilities of their return, despite bleeding profusely then moved to close the windows, unmindful of his injuries. After having done so, he collapsed and was later evacuated to the Command Hospital, Calcutta.

Lance Naik Badri Lal, thus, demonstrated conspicuous courage, and exemplary presence of mind, in defence of his fellow passengers.

7. Shri Mohmed Sattar Sodha,  
Seaman, Custom Division,  
Jamnagar, Gujarat.

(Effective date of the award : 22nd June 1992).

On the 21st June, 1992 a boat of the Customs Department on sea patrolling intercepted a Cargo Vessel carrying contraband articles. A Customs guard was immediately posted on the vessel. The next day at about midnight of 22nd June, 1992 the vessel was set on fire by the tindal as he apprehended arrest because he was carrying contraband silver. The officers on board had no choice but to hang on to some ropes hanging out from the vessel. On seeing the officers on guard duty perilously poised on the edge of the vessel, Mohmed Sattar Sodha who was on board the Customs boat, lowered a life boat into the stormy sea and successfully rescued five Customs guards from the blazing vessel. Shri Mohmed Sattar Sodha then ventured into the stormy sea once again to look for another officer who was missing. He continued his search till day break, unmindful of the risk to his own life.

Shri Mohmed Sattar Sodha, thus showed exemplary courage and devotion to duty in saving the lives of his fellow and superiors.

8. 3382222 Naik Balbir Singh, (Posthumous)  
2 Sikh Regiment

(Effective date of the award : 13th July 1992)

On the 13th July, 1992 at about 2.30, the road opening party of 2 Sikh Regiment was returning to its permanent location at Budgam in Jammu and Kashmir after completing its assigned task. Naik Balbir Singh was in the leading vehicle. As the leading vehicle reached a culvert on a sharp bend the entire convoy came under heavy fire from militants using automatic weapons from a neighbouring fenced height. One of the terrorists lobbed a hand grenade on the vehicle. Naik Balbir Singh saw the grenade coming and, in a swift and daring move picked it up and hurled it away, thus saving the lives of his colleagues. Not content with this, he sprang out of the vehicle, and with utter disregard to his personal safety, started returning fire. In the course of this exchange he sustained a bullet injury in his neck. Undaunted, he continued firing at the terrorist, forcing them to retreat. At this moment another bullet injured him on the head, and he fell unconscious. He was subsequently evacuated to the Base Hospital, where he succumbed to his injuries.

Naik Balbir Singh, thus made the supreme sacrifice while engaging terrorists with exemplary courage and daring.

9. 1464992 Lance Naik Dhian Singh, Engineers  
(Posthumous)

(Effective date of the award : 20th July 1992)

On the 20th July, 1992, cordon and search operations were launched so as to apprehend four dreaded terrorists hiding in a jowai field in a village in Punjab. During the operations Lance Naik Dhian Singh observed that the life of an officer was in danger. He immediately left his secure position, rushed towards the open field, and opened fire on the terrorists in order to divert their attention from the officer towards himself, so that the former may be saved. In the process Lance Naik Dhian Singh sustained grievous injuries due to the terrorists fire. Undaunted he still managed to engage a dreaded criminal, and crippled him. While doing so he received a second burst of fire, and collapsed, later succumbing to his injuries.

Lance Naik Dhian Singh displayed exemplary courage, loyalty and devotion to duty.

10. 2586459 Lance Naik K. Surendran Nair,  
18 Madras Regiment (Posthumous)

(Effective date of the award : 2nd August, 1992)

On the 2nd August, 1992, at two in the afternoon, 18 Madras, with a platoon of 4 JAK RIF, moved to cordon an area near Usman village in Taran district of Punjab, where the police was engaged in an encounter with the terrorists, who were concealed in a ditch screened by thick Sarkanda grass. Lance Naik K. Surendran Nair spotted another cemented drain, also covered with Sarkanda. He moved stealthily towards this. When he was barely 5 meters away from his objective, a terrorist opened fire and Lance Naik K. Surendran Nair was wounded in the stomach. Despite being mortally wounded he charged with his Light Machine Gun, firing from the hip, and grievously injured the terrorist. Although received another burst of bullets, this time on his chest, he continued to bring down accurate fire on the terrorists, till at last he fell unconscious, with his finger still on the trigger. He was evacuated to the Military Hospital Amritsar, where he succumbed to his injuries. The terrorist he had mortally wounded was Ram Rajinder Singh, a category 'A' list terrorist of the Bhindrawala Tiger Force of Khalistan (Sangha Group), who carried a cash award of Rupees one lakh on his head.

Lance Naik K. Surendran Nair, thus displayed exemplary courage, outstanding devotion to duty, and rare spirit of self sacrifice in his fight against the terrorists.

11. Major Raj Kumar (IC-44179),  
2 Sikh Regiment

(Effective date of the award : 4th August, 1992)

At 4.40 on the morning of the 4th August, 1992, while laying a cordon around two villages of District Budgam, Jammu and Kashmir, the troops of Delta company of 2 Sikh Regiment came under heavy fire from some terrorists trapped inside the two villages. While the heavy exchange of fire was going on, Major Raj Kumar, alongwith his radio operator, was moving from place to place, urging his troops and exercise control on their fire. At about 5.30 that morning Major Raj Kumar noticed some movements in the thick foliage nearby. He challenged the anti-national elements concealed in the foliage, demanding that they surrender. The three armed terrorists holding their AK-56 rifles at the ready, suddenly charged towards Major Raj Kumar, and his radio operator. Major Raj Kumar too charged towards the anti-national elements, letting loose a volley of bullets. This took the terrorists by surprise, and all three were killed. Three AK-56, six magazines, and 135 cartridges were recovered from the killed terrorists.

In the action Major Raj Kumar, demonstrated conspicuous gallantry and undaunted courage in the face of terrorist fire.

12. Shri Yudhvir Singh

13. Shrimati Arti Bala  
Gurdaspur, Punjab

(Effective date of the award : 11th September, 1992)

On the 11th September, 1992 at 6.20 in the morning two terrorists entered the house of Shri Yudhvir Singh, in village Halla, District Gurdaspur, Punjab and demanded that his father revolver be surrendered. On the pretext of fetching the revolver, Shri Yudhvir Singh went upstairs to the roof of his house and shouted for help. Apprehending trouble one of the terrorists followed Shri Yudhvir Singh to the roof, and fired at him. With great courage the bare handed Shri Yudhvir Singh grappled with the terrorist, as a result of which the terrorist missed his target. He then found a rod lying on the roof, and hit the terrorist with it, and succeeded in snatching his pistol away. Shrimati Arti Bala, wife of Shri Yudhvir Singh, who was downstairs in the meanwhile had engaged the other terrorist in a similar scuffle, making it impossible for him to use any weapons. Shri Yudhvir Singh managed to give the terrorist with whom he was grappling a resounding blow with the rod as a result of which the terrorist fell unconscious and later died.

Shri Yudhvir Singh and Shrimati Arti Bala, displayed fearlessness, daring, and presence of mind in opposing the terrorists.

14. 2974683 Havildar Ved Prakash,  
24 Rajput Regiment

(Posthumous)

(Effective date of the award : 26th September, 1992)

On the 26th September, 1992, a Brigade level Counter Insurgency Operation was carried out in District Kupwara in Kashmir Valley. When a quick reaction team of 24 Rajput was approaching a village from the western direction it came under heavy fire of automatic weapons and Rocket Projectile Gun fire from the terrorists. The entire action was halted by this blasting fusillade. Havildar Ved Prakash, having located the source of the fire assaulted the entrenched terrorist who was firing from a close range. The terrorist aimed his gun and fired a burst on Havildar Ved Prakash, severely injuring him. In spite of being mortally wounded, Havildar Ved Prakash closed on him, and with a burst of fire shot him dead. After the encounter the bodies of Havildar Ved Prakash was found lying dead on top of his dead assailant.

Havildar Ved Prakash, demonstrated exceptional courage great initiative and exemplary fighting spirit.

15. 4177463 Sepoy Dashrath, (Posthumous)  
13 Kumaon Regiment

(Effective date of the award : 1st October, 1992)

On the 1st October, 1992, Sepoy Dashrath was part of a cordon and search operation being conducted by his battalion in village Bakthakar in Jammu and Kashmir. On spotting two anti-national elements bringing down a heavy and accurate volley of fire on his party from a nearby apple orchard Sepoy Dashrath, on his own initiative charged at them. This so unnerved the terrorists that they abandoned their position, leaving behind one of their weapons. At this juncture another group of terrorists retaliated on Sepoy Dashrath, wounding him in chest, and caused this brave soldier to breathe his last. The charge of Sepoy Dashrath had succeeded in dislodging the terrorists from their prepared positions, and prevented further casualties amongst the soldiers of 13 Kumaon.

Sepoy Dashrath, thus, exhibited exemplary courage, and initiative.

16. JC-192929 Naib Subedar Sarnam Singh Sharma,  
24 Rajput (Posthumous)

(Effective date of the award : 15th October, 1992)

In the early hours of the 15th October, 1992, a column of 24 Rajput was in the process of cordoning off Tangwari village in Kupwara district of Jammu and Kashmir. At about five thirty in the morning the terrorists trapped within the cordon commenced firing. Naib Subedar Sarnam Singh Sharma crept forward to reconnoiter. Suddenly the terrorists hailed bullets at him from as close a distance as 10 metres. Naib Subedar Sarnam Singh Sharma, with total disregard of his personal safety, charged at the firing terrorists, simultaneously firing from the hip, with his own weapon and succeeded in killing two terrorists on the spot. A third terrorist who, was hiding nearby, then opened fire on the Junior Commissioned Officer, severely wounding him. He succumbed to his injuries shortly thereafter.

Naib Subedar Sarnam Singh Sharma, exhibited conspicuous courage, and devotion to duty while making the supreme sacrifice.

17. 2882645 Rifleman Netrabhan Singh, (Posthumous)  
11 Rajputana Rifles.

(Effective date of the award : 22nd October, 1992)

On the 22nd October, 1992, Rifleman Netrabhan Singh alongwith his platoon was tasked to cordon and search village Muran Pulwama, Jammu and Kashmir. Some anti national elements indiscriminately opened fire on his section, thereby injuring him and his Section Commander. Even though injured, and unmindful of his personal safety, Rifleman Netrabhan Singh, charged on them killing a hardcore anti-national element, from whom one AK-56 rifle, three AK magazines and some ammunition was later recovered. However, in the ensuing exchange of fire, Rifleman Netrabhan Singh was shot, and died on the spot.

Rifleman Netrabhan Singh, displayed exemplary gallantry and indomitable spirit in sacrificing his life in fighting against anti-national elements

18. JC-161012 Subedar Chain Lal, (Posthumous)  
17 Jammu and Kashmir Rifles.

(Effective date of the award : 2nd November, 1992)

On the 2nd November, 1992, an Army detachment was deployed to apprehend terrorists in Satsari Sector, Jammu and Kashmir. In the ensuing encounter, after a Non Commissioned Officer was injured, Subedar Chain Lal took the initiative and rushed towards the terrorists through a narrow terrain. He was pinned down by their accurate and effective fire, and sustained injuries. However he refused to be evacuated, and instead exhorted his men to maintain pressure on the criminals. The operation was successful, and two terrorists were killed. Subedar Chain Lal succumbed to his injuries while being evacuated to hospital by helicopter.

Subedar Chain Lal laid down his life in leading his men unmindful of his personal safety and undaunted by terrorist fire.

19. Wing Commander Viman Kumar Arora (12954),  
Flying (Pilot).

20. Squadron Leader Anil Kumar Gupta (17007),  
Flying (Pilot).

21. 661178 Sergeant Ramesh Chand,  
Flight Gunner.

(Effective date of the award : 11th November, 1992)

On the 11th November, 1992 Wing Commander Viman Kumar Arora, the Commanding officer (CO), Squadron Leader Anil Kumar Gupta and Sergeant Ramesh Chand, flight Gunner were on the Helicopter flight entrusted with the task of providing logistics support to the Oil and Natural Gas Commission at Bombay High.

On the return flight, due to a serious emergency while the helicopter was still over the sea, Wing Commander Arora decided to land on the nearest available platform. Suddenly the helicopter experienced total loss of power and crashed into the sea. The cockpit was immediately flooded. Wing Commander Arora managed to make good his escapes from the rapidly sinking helicopter. He was soon followed by Squadron Leader Gupta. In the mean while Sergeant Ramesh Chand had prepared the passengers for a quick exit on impact. He threw out the dingy as soon as the helicopter hit the water, but it was pushed back. Sergeant Ramesh Chand, with total disregard to personal safety, assisted seven to eight passengers in getting out of the sinking helicopter. He abandoned the helicopter only when the water had reached upon his neck.

In the meanwhile Wing Commander Arora, saw a passenger struggling for his life. He swam across to help him. In a state of panic, the passenger struggled and tried to push Wing Commander Arora under the water, in this process causing injuries to him despite this. Wing Commander Arora persisted with his efforts, and was able to save the passenger from drowning. Thereafter he spotted another passenger struggling for survival, and swam across to support him till help arrived.

On emerging from the cockpit, Squadron Leader Gupta had noticed a passenger shouting for help. Whilst trying to keep afloat, He swam across and provided the needed help, thus ensuring the passenger's survival. He then observed that the Flight Engineer, the forth crew member, was injured and in danger. Unmindful of his own safety, Squadron Leader Gupta swam across to the Flight Engineer and assisted him to stay afloat.

Wing Commander Viman Kumar Arora Squadron Leader Anil Kumar Gupta and Sergeant Ramesh Chand, thus, displayed exemplary courage and presence of mind, in saving invaluable human lives.

22. 2870829 Havildar Bhim Singh, (Posthumous)  
7 Rajputana Rifles.

(Effective date of the award : 14th November, 1992)

On the 13th November, 1992 while searching for terrorists in Jammu and Kashmir Havildar Bhim Singh and his section came under heavy fire from terrorists who were occupying a dominating position behind some boulders. Havildar Bhim Singh successfully extricated his section, without any loss.

On the 14th November, 1992 Havildar Bhim Singh alongwith his section, volunteered to tackle these terrorists, hiding behind boulders in a thickly wooded area, from a different direction. While doing so he spotted three terrorists whom he pinned down, and succeeded in killing two of them. He then moved forward with his section, and began approaching the cliff where the third terrorist was suspected to be hiding. The terrorist opened fire on Havildar Bhim Singh from a distance of barely 25 metres. Havildar Bhim Singh received multiple bullet injuries on his left shoulder and arm. Though grievously wounded, and bleeding profusely, Havildar Bhim Singh fired from his rifle and managed to kill the third terrorist. Unfortunately, Havildar Bhim Singh slipped from the cliff and fell about 200 metres to his death.

In this action Havildar Bhim Singh, displayed conspicuous courage, a high quality of leadership and exemplary devotion to duty, making the supreme sacrifice in his fight against the armed terrorists.

23. G/129367-X Driver Mechanical Equipment,  
Gopal Singh

(Effective date of the award : 20th November, 1992)

Driver Mechanical Equipment (DMF) Gopal Singh was detailed on 20th November, 1992 on a dozer which was engaged in undertaking formation cutting works and proceeding towards Tuting on the Migging-Tuting road in Arunachal Pradesh.

The Rigong river was a major obstacle in carrying out formation cutting ahead of it, and its deep fast flowing waters,



with running boulders, made its crossing extremely difficult. While manoeuvring the dozer in midstream, DME Gopal Singh faced a serious threat to his life when a big boulder upstream hit the dozer forcefully, and obstructed its movement on either side. Yet he remained undeterred and without losing his balance of mind, after about 40 minutes of effort successfully extricated the dozer, enabling the work of formation cutting to be executed in time.

Driver Mechanical Equipment Gopal Singh faced a hazardous situation with conspicuous courage and dedication.

24. Flight Lieutenant Anurana Saluja (19152)  
Flying (Pilot).

(Effective date of the award : 26th November, 1992)

On the 26th November, 1992, Flight Lieutenant Anurana Saluja was authorised to fly in a two aircraft parallel quarter attack sortie. During the sortie, he noticed warning lights for both hydraulic systems coming "ON". Though the pressure indicated normal, he experienced severe longitudinal oscillations which were violent enough to warrant abandoning of the aircraft by resorting to ejection. Instead, he exhibited great professional skill and presence of mind in endeavouring to control the aircraft. He then experienced temporary radio failure, trim failure, abnormal position of the cone system resulting in loss of engine thrust, and tachogenerator malfunction, giving inaccurate engine power settings. Soon after, he noticed the main pneumatic failure, which meant that maximum rate braking, directional control, and tailchute operation on landing, would not be available.

As a result of these multiple emergencies, the aircraft could have gone out of control, or exploded and crashed at any moment. The situation warranted ejection by the pilot. Flight Lieutenant Saluja however, did not eject and instead handled all the emergencies in a most competent manner. He recovered the aircraft, and landed it safely, at great risk to his own life. Flight Lieutenant Saluja not only succeeded in saving a valuable aircraft, but also was able to provide vital evidence during investigations which could go a long way in instituting remedial measures for the future.

Flight Lieutenant Anurana Saluja, demonstrated technical skill, professional competence and great valour in dealing with the emergencies.

25. 2974046 Havildar Raksh Pal Singh, (Posthumous)  
27 Rajput Regiment.

(Effective date of the award : 28th November, 1992)

On the 28th November 1992, 27 Rajput carried out a cordon and search operation of a village in Jammu and Kashmir. During house to house searches, Havildar Raksh Pal Singh entered a house with three Other Ranks, to conduct a search. At this time a dreaded terrorist opened fire on the search party from a well concealed hideout. Havildar Raksh Pal Singh suffered a gun shot wound on his stomach in the first burst of fire from the AK-56 assault rifle of the terrorist. Despite being seriously injured, Havildar Raksh Pal Singh returned the fire, and critically wounded the terrorist. The injured terrorist on finding himself cornered was preparing to lob a hand grenade on the search party. However Havildar Raksh Pal Singh saw the terrorist pulling out the pin from the grenade. With lightning speed he rushed the other members of his party to safety. He himself managed to take cover safely before the grenade exploded. His daring, and the swiftness of his action saved the lives of his comrades.

Despite being wounded Havildar Raksh Pal Singh then continued to return the fire coming from the terrorist. In a to take cover safely before the grenade exploded. His daring, and the swiftness of his action saved the lives of his comrades.

Havildar Raksh Pal Singh conducted himself with conspicuous courage and dedication in the face of heavy odds.

26. 13742215 Naik Jhalman Dass, (Posthumous)  
20 Jammu and Kashmir Rifles.

(Effective date of the award : 26th December, 1992)

On the 26th December 1992, Naik Jhalman Dass was detailed as commandant of a link party between Darshak and Zulu posts in Saichen. At about 9 PM a massive avalanche suddenly came down the vertical ice wall and took with it the entire link party.

Though all the persons were buried under snow, Naik Jhalman Dass did not panic, but instead exhibiting cool courage and strong nerves, extricated himself from the snow. He then crawled to his colleagues buried under the snow and started clearing the snow with his bare hands. The rescue party offered him first aid but he refused aid and directed all men to continue the rescue operation. In the mean time Naik Jhalman Dass died of exposure, extreme cold, and third degree frost bite besides fracture of femur bones of both his legs.

Displaying exceptional courage, and maintaining the highest positions of the Indian Army Naik Jhalman Dass laid down his life in order to save the lives of his fellow soldiers.

27. G/167913-H Pioneer Braj Bihari, (Posthumous)

(Effective date of the award : 31st December 1992)

Leh Chalunka Road in Ladakh is a life line for the Indian troops deployed in the border areas of Siachen, Shyok etc. The temperature in this area in winter is about  $-40^{\circ}$  degree celsius. On the 31st December 1992, Pioneer Braj Bihari alongwith Pioneer Chander Prakash was assisting the dozer operator in clearing the snow on this road. In the operation of snow clearance, a huge snow avalanche slid from the rock and Pioneer Chander Prakash was buried upto his chest in snow from which situation he shouted for help. Pioneer Braj Bihari rushed down to rescue his colleague despite imminent danger to his own life. Displaying tremendous physical strength and exceptional courage, he succeeded in extricating his colleague upto the waist level. Suddenly another massive snow slide came down the rock face and swept Pioneer Braj Bihari, about 800 Mtrs down the side of the Mountain. He got completely buried in the snow and died.

Pioneer Braj Bihari, thus laid down his life in order to save the life of his colleague, setting a rare example of devotion to duty and esprit-de corps.

28. Major Raju Thundiathu George (1C-36616),  
Artillery, (Posthumous)

(Effective date of the award : 23rd January 1993)

On the 23rd January 1993 Major Thundiathu George was deployed in Bijbehara town Jammu and Kashmir, when the General Officer Commanding of a Mountain Division, passing through the town came under heavy fire from anti-national elements. Major George immediately responded and swung into action encircling the terrorists with a platoon with the aim of capturing or neutralising them. The terrorists who had by now managed to cross over to the east bank of the River Belum, were then pursued by Major George and successfully located. He then deployed a section on the home bank and began to cross the river with the remaining two sections. The anti-national elements pinned down his sections with heavy fire from their Universal Machine Gun. Undeterred Major George kept up his pursuit so as to engage them. It was then that he was hit by burst of fire on the neck and fell. Still he refused to be evacuated and continued to inspire his men to engage the terrorists. The Javans of Rashtriya Rifles under his brave leadership fought resolutely inflicting several casualties on the armed terrorists. Major George was eventually evacuated to the Battalion Headquarters, where he made the supreme sacrifice of his life.

Major Raju Thundiathu George displayed conspicuous gallantry, exceptional courage and a high level of dedication, without regard to his personal safety.

29. G/171789-K Operator Excavating Machinery  
Mukesh Kumar. (Posthumous)

(Effective date of the award: 7th February 1993)

On the night of 6th/7th February 1993, the Lachen-Kalep road in Sikkim was extensively blocked due to widespread land slides, shooting, boulders, and unabated rainfall. As a consequence, Army convoys carrying vital logistics to the forward troops were held up for a considerable period. Undeterred by rain and shooting boulders, OEM Mukesh Kumar accepted the challenge and started slide clearance operations with the help of his dozer in slush and heavy rain. Unfortunately, just when he was about to complete his task, a rolling boulder struck him from behind on his neck and shoulder, resulting in fatal injury.

Operator Excavating Machinery Mukesh Kumar, displayed conspicuous courage, and rare devotion to duty in clearing the National Highway for Army convoys at the cost of his life.

30 GO-1805-A Assistant Engineer (Civil),  
Mr. Gopalakrishna Kurup.

Shri MR Gopalakrishna Kurup, employed on project Beacon of Border Roads was responsible for maintenance of National Highway 1-A between Ramban and Banihal in Jammu and Kashmir. On 24th/26th February 1993 due to heavy rain and snow fall there were a number of landslides at various places. Despite severe constraints and the unstable base at the site of the land slide, Shri Kurup deployed two dozers and allied resources and concentrated his efforts on clearing the slide so to quickly open the road for vehicular traffic. While executing the work, Shri Kurup was trapped by the sudden fall of the vertical rock face carrying a large quantity of debris, from which a rock fell directly on his neck, killing him instantly.

In his endeavour to reopen the road in treacherous condition in utter disregard of his personal safety, Shri MR Gopalakrishna Kurup, displayed dedication to duty and courage of exceptional order.

31. 4064091 Lance Naik Chander Ballabh,  
10 Garhwal Rifle.

(Effective date of the award: 30th March 1993)

On the 30th March 1993, Lance Naik Chander Ballabh of 10 Garhwal Rifles was a member of the party which carried out a raid on a terrorist hideout at Shenkerpora on the outskirts of Srinagar. Lance Naik Ballabh was injured by a burst of fire from terrorists who had taken a position about 20 yards away. Before falling to the ground he opened return fire on the anti-national elements, killing one of them on the spot. Bleeding profusely from the right knee, he crawled and took position. He suddenly realised that his Commanding Officer was heading in his direction, and two other terrorists were aiming at his Commanding Officer, without caring for his personal safety. Lance Naik Chander Ballabh sprang up and shouted a warning to his Commanding Officer while simultaneously firing a long burst on the concealed terrorists. The two anti-national elements were thus killed on the spot. They were later identified as top leaders of their outfit the "Hizbul Mujahideen".

Lance Naik Chander Ballabh, thus displayed great courage and devotion to duty in his fight against the terrorists.

32 8032514 Sepoy Janak Singh,  
Border Roads Organisation.

(Effective date of the award: 31st March 1993)

Sepoy Janak Singh was on night duty, along with a colleague, in one of the Sentry Posts of 370 Road Maintenance Platoon located at Lower Munda, on National Highway 1A in Jammu and Kashmir. On the 31st March, 1993 at three in the morning about 30-40 anti-national elements (ANEs) started intense firing from the higher reaches and demanded the surrender of the two sentries. The presence of large

number of armed ANEs however did not deter Sepoy Janak Singh, who immediately took position with his SLR, and opened controlled firing and retained presence of mind, and his courage, even though he had access to very limited ammunition. He used his limited ammunition with such telling effect that with a mere 13 rounds he repelled the attack of the terrorists, who had expended as many as 100 rounds. The single handed challenge of Sepoy Janak Singh frustrated the attack of the dreaded terrorists and forced them to flee the GREF camp without being able to cause any casualty.

Sepoy Janak Singh, displayed exemplary courage and an indomitable spirit in this encounter, and succeeded in saving the lives of his colleagues.

33. Second Lieutenant Suresh Radhakrishnan (IC-50427),  
11 Rajputana Rifles.

(Effective date of the award: 9th April 1993)

On the 9th April 1993, 11 Rajputana Rifles was tasked to cordon and search village Pohor in Budgam District of Jammu and Kashmir. The Commando platoon came under a heavy volume of fire from terrorists in two different groups who were swiftly changing positions in a bid to break out of the cordon. The two groups of terrorists were providing covering fire to each other in turn. On seeing this, Second Lieutenant Suresh Radhakrishnan reacted quickly and ordered one of the commando teams to cut off the escape route of terrorists. He, himself, along with another commando team, moved ahead and took position to pindown the escaping terrorists. The terrorists continued to fire at the commando platoon while changing positions and running. Second Lieutenant Radhakrishnan, with a total disregard of his personal safety, rushed towards the terrorists, and was single handedly responsible for inflicting two fatal casualties on the terrorists.

In this action, Second Lieutenant Suresh Radhakrishnan, displayed great courage, determination, initiative, and leadership qualities of a high order while under fire from armed terrorists.

34. Captain Vellanki Sesha Sai (IC-49857),  
Army Education Corps. (Posthumous)

(Effective date of the award: 15th April 1993)

On the 15th April 1993, 5 Guards launched a cordon and search operation in Sonur Town, Jammu and Kashmir. The terrorists opened effective fire on the cordon and on receipt of the above information, the Commander of the Mountain Brigade, alongwith Captain Vellanki Sesha Sai, the Brigade Education Officer, proceeded to the operational area. At nine thirty that morning when the leading protection vehicle reached the Fruit Market crossing, it came under an ambush laid by the terrorists, and the protection party was effectively engaged from close quarters by terrorists wielding 35 to 40 weapons, including Universal Machine Guns, Rocket Launchers M-16s and AK rifles. The protection party returned the fire but could not extricate themselves.

Captain Vellanki Sesha Sai, seeing the predicament of the protection party, rushed to their aid with five Other Ranks, to provide covering fire to extricate the personnel of the vehicle caught in the ambush. The uninjured extricated themselves from the vehicle, which was burning by now due to a grenade burst. Captain Sai, then saw two Other Ranks, badly injured lying in the burning vehicle. Unmindful of his personal safety, braving a heavy volume of fire, he rushed to the vehicle and was able to extricate one of the two persons. While extricating the second person he himself was mortally wounded on the back of his head by a burst of fire from AK rifles.

Captain Vellanki Sesha Sai displayed in this encounter exceptional courage, daring leadership and laid down his life in his fight against the armed terrorists.

35 2877958 Naik Ram Kumar. (Posthumous)  
Rajputana Rifles.

(Effective date of the award: 15th April 1993)

On the 15th April, 1993 in the fruit market crossing in Sonore Jammu and Kashmir, the protection party of the Commander of the Mountain Brigade came under an ambush

laid by the terrorists. The party was fired at by Universal Machine Guns, Rocket Launchers, M-16 and AK rifles. Naik Ram Kumar of the Brigade Headquarters, who was in the protection vehicle, started retaliatory fire on the terrorists in order to help extricate his comrades from the vehicle. The retaliatory fire by Naik Ram Kumar from the vehicle helped in evacuating the personnel from the vehicle which had started burning due to a grenade attack. Naik Ram Kumar stood like a rock, firing on the terrorists, and though sustaining a bullet injury in the heavy exchange of fire, he continued to fire till his comrades had extricated themselves, and finally fell mortally wounded in the burning vehicle.

Naik Ram Kumar, thus demonstrated exceptional courage leadership qualities, and made the supreme sacrifice in his fight against the terrorists.

36. Ajay Kumar Thapa,  
Petty Officer Air Fitter (Special Duty), (146043-T).

(Effective date of the award : 17th April, 1993)

On the 17th April, 1993, at about 7 P. M. a major fire occurred in Jagadhapatnam village in Tamil Nadu, the flames of which could be seen from a distance. Petty Officer Thapa who was on patrolling duty raised the alarm and rushed to the village where he saw that a grass hut was on fire, and there was danger to the entire village due to the thatched huts being close together. Seeing that the inhabitants of the village were dazed by the event and reluctant to take any swift action, the sailor dived into the burning hut under cover of a wet mat. His first action was to bring out two children who were trapped inside the hut, and had no means of escape.

Still fearing that the fire might spread to the other huts of the village, which were close by the sailor once again disregarded great personal danger, whilst venturing into the blazing hut and physically pulling down the bamboo frame which supported the burning structure, and then beat out the grass and other burning material inside. Timely intervention on the part of the sailor prevented the fire from spreading to other grass huts, and to the diesel drums and fishing boats under repair nearby, which could have resulted in a major conflagration and great loss of life and property.

Petty Officer Air Fitter (Special Duty), Ajay Kumar Thapa, displayed exceptional courage, and rare presence of mind, in saving the lives and property of the villagers with utter disregard of his personal safety.

37. 1573540-A Sapper/Operator Excavating Machinery  
Shahzad Khan (Posthumous)

(Effective date of the award : 20th April, 1993)

Sapper/Operator Excavating Machinery Shahzad Khan was deployed with his dozer on snow clearance task, in the difficult terrain near Tanglang La on Upshi-Sarchu road, at an altitude of 17,582 feet, in adverse weather conditions. While clearing snow, the dozer started slipping down the hill side as the retaining wall underneath the dozer had given way. Shri Shahzad Khan, displaying courage and skill brought the dozer under control, by manoeuvring it properly and was thus able to save himself, and his two colleagues, besides the dozer itself.

On the same road at another location, Shri Shahzad Khan happened to come across a 40 feet accumulation of snow. Though he was under grave risk because of over hanging snow on the road side which could have fallen on him, injuring or killing him, he did not panic. While continuing with his task of snow clearance, the track of the dozer started sliding on the frozen ice, and it started to topple. Although he had a fair chance to bail out to the dozer, at this juncture he did not leave the controls, being determined to save the valuable machine. Because of his gallant efforts, unfortunately Shri Shahzad Khan fell and was crushed under the dozer, and dying on the spot.

Sapper/Operator Excavating Machinery Shahzad Khan, displayed exceptional courage and dedication at the cost of his own life.

38. 13742820 Lance Naik Nek Singh,  
2 Jammu and Kashmir Rifles.

(Effective date of the award : 5th May, 1993)

On the 5th May, 1993, Lance Naik Nek Singh was part of a raiding party on a Hizbul Mujahideen hideout located in the hills, at a height of approximately 2600 metres south of Qazigund, district Anantnag, in Jammu and Kashmir. Lance Naik Nek Singh and the adjutant of the battalion crawled up to a terrorist bunker, where four armed terrorists were seated, about 20 metres away. They were able to achieve complete surprise and in the ensuing encounter killed the terrorist. However, the remaining terrorists from the neighbouring bunkers opened fire on them. Lance Naik Nek Singh, along with the adjutant, fearlessly assaulted the terrorists, whilst firing at the same time from their own weapons, and were successful in inflicting two more casualties. During the operation six AK-56 rifles with 16 magazines, 440 rounds of ammunition, and 3 hand grenades were also recovered.

In the action Lance Naik Nek Singh, displayed exceptional courage and great determination in the face of heavy odds.

39. 13751542 Rifleman Rajeshwar Singh,  
2 Jammu and Kashmir Rifles. (Posthumous)

(Effective date of the award : 12th May, 1993)

On the 12th May, 1993, Rifleman Rajeshwar Singh of 2 Jammu and Kashmir Rifles was engaged in cordon and search operations in village Nanar, district Pulwama, in Jammu and Kashmir. While on the task Rifleman Rajeshwar Singh noticed two terrorists escaping from the cordon. He immediately, ran after them along with his fellow Jawans. Moving fast over ploughed fields, he closed on the terrorists who had taken up position some distance away. The terrorists opened intense automatic fire on the patrol. In a daring action Rifleman Rajeshwar Singh, moving stealthily, crept close to the terrorists, and in utter disregard to his personal safety, charged upon the terrorists, killing both of them on the spot. During this act he was under heavy automatic fire, from the terrorists, which resulted in his receiving a bullet injury on his chest, causing extensive loss of blood. He later succumbed to his injuries. This gallant action by Rifleman Rajeshwar Singh resulted in inflicting two casualties on Pakistan trained terrorists, and the recovery of two AK-56 rifles, five magazines, 125 rounds of AK ammunition, one hand grenade, and five detonators.

In this display of great courage, and devotion to duty beyond consideration of his personal security Rifleman Rajeshwar Singh laid down his life in the highest traditions of the Indian Army.

40. Lieutenant Harjinder Pal Singh Dhami  
(IC-50621) Rajput Regiment. (Posthumous)

(Effective date of the award : 27th June, 1993)

On the 27th June, 1993, Lieutenant Harjinder Pal Singh Dhami received information that a meeting of terrorists commanders was taking place in a village of Kupwara District, Jammu and Kashmir. Though Lieutenant Dhami had only a few troops, he surrounded the village, and taking with him only six Jawans, led the assault party to the meeting place. The District Commanders of Al-Barq, Hizbul Mujahideen and Jamait-ul-Mujahideen, with four Afghans, were in the meeting. When the look out deployed by the terrorists opened intense fire with Universal Machine Guns and AK rifles, the brave officer, unmindful of his personal safety, charged at him. This unnerved the terrorist, one of whom was shot dead by Lieutenant Dhami in encounter. The brave officer then fired at the second terrorist, but the third hiding nearby fired a Universal Machine Gun burst, which pierced the young officer's chest. His men, motivated by their officer's bravery, killed another terrorist and recovered a large quantity of arms and ammunition.

Lieutenant Harjinder Pal Singh Dhami laid down his life in his fearless encounter with terrorists, conducted with no need for his personal safety.

G. B. PRADHAN,  
Director

MINISTRY OF LAW, JUSTICE AND COMPANY  
AFFAIRS

(DEPARTMENT OF LEGAL AFFAIRS)

New Delhi, the 29th October 1993

No. F. 11(1)/88-CILAS.—Whereas the Supreme Court Legal Committee was constituted by a Resolution dated 9th July, 1981.

2. AND WHEREAS by the Notification dated 22-11-1991, the present Supreme Court Legal Aid Committee was formed in pursuance of the above Resolution for a period of one year with effect from 1-11-1991 or till the Legal Services Authorities Act, 1987 comes into force, whichever is earlier.

AND WHEREAS the term of the Supreme Court Legal Aid Committee was continued for a period of one year with effect from 1-11-1992 vide Notification of even number dated 5-11-1992.

AND WHEREAS the term of the Supreme Court Legal Aid Committee expires on 31-10-1993.

NOW, therefore the President, in continuation of the Notification of even number dated 5-11-1992, is pleased to extend the term of the present Supreme Court Legal Aid Committee, headed by Mr. Justice P. B. Sawant, Judge Supreme Court of India, for a further period of one year with effect from 1-11-1993 or till the Supreme Court Legal Aid Committee is constituted in terms of the provisions of the Legal Services Authorities Act, 1987, whichever is earlier.

Dr. V. K. AGARWAL, Addl. Secy.

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT  
(DEPARTMENT OF EDUCATION)

New Delhi, the 28th February 1994

No. F. 10-4/93-U. 5.—Under Rules 3 and 6 of the Memorandum of Association and Rules of the Indian Council of Social Science Research, New Delhi, the Government of India has nominated the following Social Scientist as Member of the Council with immediate effect upto the period indicated against him :—

Prof. Amiya Kumar Bagchi, 31st March 1996  
Director,  
Central for Studies in Social Sciences,  
10, Lake Terrance,  
Calcutta-700 029.

D. S. MUKHOPADHYAY, Jt. Secy.

MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIEVANCES &  
PENSIONS  
(DEPARTMENT OF PERSONNEL & TRAINING)

New Delhi, the 25th February 1994

RULES FOR ASSISTANTS GRADE EXAMINATION 1993

CORRIGENDUM

No. 6/21/93-CS I.—In the English version of the Notification No. 6/21/93-CS. I for the aforesaid examination published in the issue of official gazette dated 16th October, 1993 some paras may be read as following :

- (i) Para (2) may be read as : The number of vacancies to be filled on the result of the exam will be determined later on as specified in the Notice issued by the Commission. Reservation will be made for candidates belonging to the Scheduled Castes, Scheduled Tribes and other backward classes in respect of vacancies as may be fixed by the Govt.
- (ii) In the last line of the Note below para 5(c) (V), Rules 5(c) (iv) should be read as "5(c) (iii)".
- (iii) Para 10 should be read as "candidates must pay Rs. 35 as examination fee. No fee for SC/ST candidates."

(iv) Para 11 should be read as "Any attempt on the part of candidates to obtain support for his candidature by any means may disqualify him for admission.

(v) Fourth line of para 13 should be read as : "that order so many candidates as are found by the Commission."

(vi) The last line of the second sub-para to para 13 should be read as 'reserved for the Scheduled Castes/Scheduled Tribes and OBCS'.

(vii) Para 15 of the Notification should be read as "subject to other provisions contained in these rules due consideration will be given at the time of making appointment on the result of examination in the order of merit to the preference expressed by a candidate for various services/posts in the detailed application form.

(viii) In the last line of the para 21, the word "Appendix-I" should be read as "Appendix-II".

C. BHASKAR, Under Secy.

RULES FOR LIMITED DEPARTMENTAL  
COMPETITIVE EXAMINATION

New Delhi, the 9th April 1994

No. 9/3/94-CS.II.—The Rules for a Limited Departmental Competitive Examination for inclusion in the Select List for the Upper Division Grade of the Central Secretariat Clerical Service, Railway Board Secretariat Clerical Services, Department of Tourism (Headquarters Estt.), Central Vigilance Commission and Ministry of Parliamentary Affairs to be held by the Staff Selection Commission in 1994 are published for general information.

2. The number of persons to be selected for inclusion in the select list will be specified in the Notice issued by the Commission. Reservation shall be made for the candidates belonging to the Scheduled Castes and Scheduled Tribes after taking into account the vacancy position reported to the Commission by the indenting cadres/officers.

Scheduled Castes/Tribes mean any of the Castes/Tribes mentioned in the Constitution namely :

1. The Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950.
2. The Constitution (Scheduled Tribes) Order, 1950.
3. The Constitution (Scheduled Castes) (Union Territories) Order, 1951.
4. The Constitution (Scheduled Tribes) (Union Territories) Order, 1951.
5. The Constitution (Jammu & Kashmir) Scheduled Castes Order, 1956.
6. The Constitution (Andaman and Nicobar Islands) Scheduled Tribes Order, 1959.
7. The Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Tribes Order, 1962.
8. The Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Castes Order, 1962.
9. The Constitution (Pondicherry) Scheduled Castes Order, 1964.
10. The Constitution (Uttar Pradesh) Scheduled Tribes Order, 1967.
11. The Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Castes Order, 1968.
12. The Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Tribes Order, 1968.
13. The Constitution (Nagaland) Scheduled Tribes Order, 1970.
14. The Constitution (Sikkim) Scheduled Tribes Order, 1978.

15. The Constitution (Sikkim) Scheduled Castes Order, 1978.

16. The Constitution (Jammu and Kashmir) Scheduled Tribes Order, 1989, amended from time to time.

2A. Reservation shall also be made for candidates belonging to the Physically handicapped (for OH and HH).

*Note:* The question of making reservation for VH category also is under consideration.

3. The examination will be conducted by the Staff Selection Commission in the manner prescribed in the Appendix to these Rules.

The dates on which and the places at which the examination will be held shall be fixed by the Commission.

4. Any permanent or regularly appointed temporary officer of the Lower Division Grade of the Central Secretariat Clerical Service, or Railway Board Secretariat Clerical Service, or the Department of Tourism (Headquarters Estt.) or Central Vigilance Commission or the Ministry of Parliamentary Affairs who on the 1st August, 1994 satisfies the following conditions shall be eligible to appear at the examination.

#### (1) Length of Service

He should have on the 1st August, 1994 rendered an approved and continuous service of not less than 5 years in the Lower Division Grades of the Central Secretariat Clerical Service, or Railway Board Secretariat Clerical Service or in the post of Lower Division Clerk in the Department of Tourism (Headquarters Estt.) or in the Central Vigilance Commission or in the Ministry of Parliamentary Affairs.

Provided that if he had been appointed to the Lower Division Grades of the Central Secretariat Clerical Service, Railway Board Secretariat Clerical Service or the Department of Tourism (Headquarters Estt.) or the Central Vigilance Commission or the Ministry of Parliamentary Affairs on the result of a Competitive Examination, including a Limited Departmental Competitive Examination, the result of such examination should have been announced not less than 5 years before the crucial date and he should have rendered not less than 4 years approved and continuous service in that Grade.

*Note (1)*—The limit of 5 years of approved and continuous service will also apply if the total reckonable service of a candidate is partly as a Lower Division Clerk and partly as Upper Division Clerk in the Central Secretariat Clerical Service or Railway Board Secretariat Clerical Service or the Department of Tourism (Headquarters Estt.) or the Central Vigilance Commission or the Ministry of Parliamentary Affairs.

*Note (2)*—Any permanent or regularly appointed temporary Lower Division Clerk of the Central Secretariat Clerical Service or Railway Board Secretariat Clerical Service or of Department of Tourism (Headquarters Estt.) or of Central Vigilance Commission or the Ministry of Parliamentary Affairs, who joined the Armed Forces during the period of operation of proclamation of Emergency issued on 26th October 1962, namely 26th October, 1962 to 9th January, 1968, would on reversion from the Armed Forces, be allowed to count the period of his service (including the period of training if any) in the Armed Forces towards the prescribed minimum service.

*Note (3)*—Lower Division Clerks who are on deputation to ex-cadre posts with the approval of the competent authority will be eligible, to be admitted to the examinations, if otherwise eligible. This, however, does not apply to a Lower Division Clerk who has been appointed to an ex-cadre post or to another Services on 'transfer' and does not have a lien in the Lower Division Grade of the Central Secretariat Clerical Service or Railway Board Secretariat Clerical Service or the Department of Tourism (Headquarters Estt.) or the Central Vigilance Commission or the Ministry of Parliamentary Affairs.

#### 2. Age

(a) He should not be more than 50 years of age as on 1st August, 1994, i.e. he must not have been born earlier than 2nd August, 1944.

(b) The upper age limit prescribed above will be further relaxable :—

- (i) Upto a maximum of five years if a candidate belongs to a Scheduled Castes or a Scheduled Tribe;
- (ii) upto a maximum of three years (eight years for SC/ST) in the case of Defence Services Personnel disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area and released as a consequence thereof;
- (iii) upto a maximum of three years (eight years for SC/ST) in the case of Border Security Force personnel disabled in operations during the Indo-Pakistan hostilities of 1971 and released as a consequence thereof.

SAVE AS PROVIDED ABOVE THE AGE LIMIT PRESCRIBED CAN IN NO CASE BE RELAXED

#### (3) Typewriting Test

Unless exempted from passing the monthly Quarterly Typewriting Test held by Department of Official Language under Hindi Teaching Scheme, Union Public Service Commission/Secretariat Training School Institute of Secretariat Training and Management (Examination Wing)/Subordinate Service Commission/Staff Selection Commission for the purpose of confirmation in the Lower Division Grade he should have passed this test on or before the date of notification of the examination.

5. The decision of the Commission as to the eligibility or otherwise of a candidate for admission to the examination shall be final.

6. No candidate will be admitted to the examination unless he holds a certificate of admission from the Commission.

7. A candidate who is or has been declared by the Commission to be guilty of :—

- (i) obtaining support for his candidature by any means;
- (ii) impersonating; or
- (iii) procuring impersonation by any person; or
- (iv) submitting fabricated documents or documents which have been tampered with; or
- (v) making statements which are incorrect or false, or suppressing material information; or
- (vi) resorting to any other irregular or improper means in connection with his candidature for the examination; or
- (vii) using unfair means in the examination hall; or
- (viii) misbehaving in the examination hall; or
- (ix) writing irrelevant matter, including, obscene language or pornographic matter in the script(s), or
- (x) taking away Question Booklet/answer sheet with him/her from the examination hall or passing it on to unauthorised person/persons during the conduct of their examination; or
- (xi) harassing or doing bodily harm to the staff employed by the Commission for the conduct of their examination; or
- (xii) violating any of the instructions issued to the candidates alongwith their Admission Certificates permitting them to take the examination; or
- (xiii) attempting to commit or, as the case may be abetting the commission of all or any of the acts specified in the foregoing clauses.

may, in addition to rendering himself liable to criminal prosecution, be liable :—

- (a) to be disqualified by the Commission from the examination for which he is a candidate; or
- (b) to be debarred either permanently or for a specified period :—
  - (i) by the Commission from any examination or Selection held by them; and/or
  - (ii) by the Central Government from any employment under them.
- (c) to disciplinary action under the appropriate rules.

8. Any attempt on the part of the candidate to obtain support for his candidature by any means may be held by the Commission to be a conduct which would disqualify him for admission to the examination.

9. After the examination, the candidates will be arranged by the Commission in five separate lists in the order of merit as disclosed by the aggregate marks finally awarded to each candidate and in that order so many candidates as are found by the Commission to be qualified by the examination shall be recommended for inclusion in the Select List for the Upper Division Grade upto the required number :

Provided that the candidate belonging to any of the Scheduled Castes or Scheduled Tribes, may, to the extent the number of vacancies reserved for the Scheduled Castes and Scheduled Tribes cannot be filled on the basis of the general standard, be recommended by the Commission by a relaxed standard to make up the deficiency in the reserved quota subject to the fitness of these candidates for inclusion in the Select List for the Upper Division Grade irrespective of their ranks in the order of merit at the examination.

NOTE—Candidates should clearly understand that this is a Competitive and not a qualifying examination. The number of persons to be included in the Select List for the Upper Division Grade on the results of the examination is entirely within the competence of Government to decide. No candidate will, therefore, have any claim for inclusion in the Select Lists on the basis of his performance in his examination as a matter of right.

10. The form and manner of communication of the result of the examination to individual candidate shall be decided by the Commission in its discretion and the Commission will not enter into correspondence with them regarding the result.

11. Success in the examination confers no right to selection unless the cadre authority is satisfied, after such enquiry as may be considered necessary, that the candidate having regard to his conduct in service, is suitable in all respect for selection.

Provided that the decision as to whether a particular candidate recommended for selection by the Commission is not suitable shall be taken in consultation with the Department of Personnel & Training.

12. A candidate who after applying for admission to the examination or after appearing at it, resigns his appointment in the Central Secretariat Clerical Service/Railway Board Secretariat Clerical Services, Department of Tourism (Headquarters Estt.)/Central Vigilance Commission/Ministry of Parliamentary Affairs or otherwise quits the Service or severs his connection with it or whose services are terminated by the Department or who is appointed to an ex-cadre post or to another Service on 'transfer' and does not have a lien in the Lower Division Grade of the Central Secretariat Clerical Service/Railway Board Secretariat Clerical Service/Department of Tourism (Headquarters Estt.)/Central Vigilance Commission/Ministry of Parliamentary Affairs will not be eligible for appointment on the result of this examination.

This, however, does not apply to a Lower Division Clerk who has been appointed on deputation to an ex-cadre post with the approval of the competent authority.

KARTAR SINGH, Under Secy.

#### APPENDIX

The examination shall be conducted according to the following plan :—

Part I—Written examination carrying a maximum of 300 marks in the subjects as shown in para 2 below.

Part II—Evaluation of record of service of such of the candidates who attain at the written examination, a minimum standard as may be fixed by the Commission in their discretion carrying a maximum of 100 marks.

2. The subjects of the written examination in part I, the maximum marks allotted to each paper and the time allowed will be as follows :—

Subject	Maximum Marks	Time
Paper-I (Objective Type) :		
(a) General Awareness 100 Questions	200	2 Hrs.
(b) Comprehension and writing ability of English Language 100 Questions.		
Paper-II		
Noting, Drafting & Office Procedure	100	2 Hrs.

Paper I—will be 'Objective-Multiple-Choice-Type' whereas Part-II will be Descriptive Type.

Note—There will be separate papers on Noting, Drafting and Office Procedure for candidates belonging to the two categories, viz.

(i) C.S.S.S., Department of Tourism (Headquarters Estt.), Central Vigilance Commission and Ministry of Parliamentary Affairs.

(ii) R.B.S.C.S.

3. The syllabus for the examination will be as shown in the Schedule below.

Note 1.—Candidates are allowed the option to answer the Paper II on Noting, Drafting and Office Procedure either in English or Hindi.

Note 2.—The option will be for a complete paper and not for different questions in the same paper.

Note 3.—Candidates desirous of exercising of the option to answer the aforesaid paper in Hindi (Devanagari) or in English should indicate their intention to do so clearly in Column 6 of the application form; otherwise, it would be presumed that they would answer the paper in English.

Note 4.—The option once exercised shall be treated as final and no request for alternation in column 6 of the application form shall ordinarily be entertained.

Note 5.—Question papers in respect of Paper-I (a) and Paper II will be supplied both in Hindi and English.

Note 6.—No credit for Paper II will be given for answer written in a language other than the one opted by the candidate.

Note 7(i)—For VH category candidates, both the Question papers would be set in braille. In Paper-I (Objective type) they will mark their answers in the braille question booklet itself. While in Paper-II they will have to answer the questions in braille.

Note 7(ii)—Such candidates would be required to bring their own equipment for writing answers in braille.

Note 7(iii)—VH category candidates would be allowed an extra time of half-an-hour in Paper-I and one hour in Paper-II.

4. Candidates must write the papers in their own hand. In no circumstances will they be allowed the help of a scribe to write the answers for them.

5. The Commission have discretion to fix qualifying marks in any or all the subjects at the examination.

6. Marks will not be allowed for mere superficial knowledge.

7. Deduction upto 5 per cent of the maximum marks in the written subjects will be made for illegible handwriting.

8. Credit will be given for orderly, effective and exact expression, combined with due economy of words in all subjects of the examination.

#### SCHEDULE

##### Syllabus of Examination

Papers 1(a)—General Awareness-Question will be aimed at testing the candidates general awareness of the environment around him and its application to society. Questions will also be designed to test knowledge of current events and of such matters of every day observations and experience in their scientific aspect as may be expected of an educated person. The test will also include questions relating to India and its neighbouring countries especially pertaining to History, culture geography, economic scene, general polity and scientific research.

(b) Comprehension and writing ability of English Language-Questions will be designed to test the candidates understanding and knowledge of English language, vocabulary

spellings, grammar, sentence structure, synonyms, antonyms, sentence completion, phrases and idiomatic use of words etc. There will be questions on comprehension of a passage.

Paper II—Noting and Drafting and Office Procedure—The paper on Noting and Drafting and Office Procedure will be designed to test the candidates' knowledge of Office Procedure in the Secretariat and Attached Offices and generally their ability to write and understand notes and drafts.

Candidates belonging to Central Secretariat Clerical Service/Department of Tourism (Headquarters Estt.), Central Vigilance Commission/and Ministry of Parliamentary Affairs are required to study the Manual of Office Procedure, Notes on Office Procedure issued by the Institute of Secretariat Training and Management and the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Lok Sabha and the Rajya Sabha and the Hand Book of Orders issued by the Ministry of Home Affairs regarding use of Hindi for Official purposes of the Union for this purpose.

Candidates belonging to Railway Board Secretariat Clerical Services are required to study the Manual of Office Procedure issued by the Railway Board and the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Lok Sabha and the Rajya Sabha and the Hand Book of Orders issued by the Ministry of Home Affairs regarding use of Hindi for Official purpose of the Union and the Indian Railways Compendium of orders regarding use of Official Language for this purpose.

